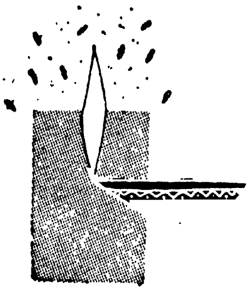


फ़ैज़

और उनकी शायरी



सम्पादक

प्रकाश पण्डित

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
अक्तूबर, १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

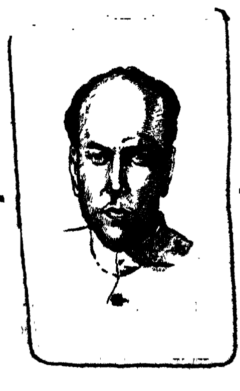
प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

इक तरफ़ लब तक नहीं खुलते हैं फ़र्ते-यास से
इक तरफ़ 'जज़्बी' मुझे शौक़े-ग़ज़ल-ख़्वानी भी है

जीवनी



नई दिल्ली के एक अरिस्टोक्रेट होटल के एक कोने की मेज़ पर पांच-छः व्यक्ति बैठे चाय पी रहे थे और आपस में हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे कि एकाएक आस-पास की मेज़ों पर बैठे लोगों ने उस मेज़ पर एक हंगामा-सा होते देखा। पांच-छः व्यक्तियों की वह टुकड़ी किस बात पर आपस में उलझ पड़ी थी, यह तो खैर किसी को मालूम न हो सका, क्योंकि ऊंचे स्वर के बावजूद उनकी बातें समझ में नहीं आ रही थीं; अलबत्ता यह ज़रूर दिखाई दिया कि नौबत हाथापाई तक पहुंचे बिना न रहेगी। विशेष रूप से गंजे सिर, ऊबड़-खाबड़ भवों और मज़बूत जबड़े वाला नाटे क़द का व्यक्ति अपने सामने के साथी के मुंह पर घूंसा जमाए बिना नहीं टलेगा। लेकिन लोग आश्चर्य से एक दूसरे का मुंह देखने लगे जब कुछ क्षणों के बाद ही वे सब पुनः घी-शक्कर हो गये और उस टुकड़ी के वे दोनों मुख्य-पात्र, जो अभी मरने-मारने पर उतारू थे, एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर एक दूसरे की आंखों में झांकने और मुस्कराने लगे।

गंजे सिर, ऊबड़-खाबड़ भवों, मज़बूत जबड़े और नाटे क़द का यह व्यक्ति उर्दू का प्रसिद्ध शायर मुईन अहसन 'जज़्बी' था। टुकड़ी में सबके सब उर्दू के माने हुए शायर और लेखक

थे और उसका अभी कुछ समय पहले का प्रतिद्वन्द्वी 'जज़्बी' ही की तरह एक प्रसिद्ध शायर और उसका घनिष्ट मित्र था और वे काव्य-चर्चा करते-करते एक बात पर आपस में उलझ पड़े थे।

'जज़्बी' ने अपने मित्र के हाथ को प्यार से दबाते हुए कहा "प्यारे! मैं शे'र कहना छोड़ दूंगा। आखिर ऐसी शायरी से क्या फ़ायदा जो दोस्ताना ताल्लुक़ात भी क़ायम न रहने दे।"

और उसके प्यारे मित्र और समकालीन शायर ने सिग्रेट का धुआं उसके चेहरे पर बिखेरते हुए और गुर्राते हुए कहा, "अगर तुमने शायरी छोड़ दी 'जज़्बी'! तो याद रखो, मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा।" और फिर सब से सम्बोधित हो उसने बड़ी उत्सुकता से कहा, "अब हम 'जज़्बी' से उसकी नई ग़ज़ल सुनेंगे।"

"यहां?" 'जज़्बी' ने बड़े आश्चर्य से आस-पास बैठे हुए भद्र लोगों की ओर देखा।

"हां, यहीं!" उसका मित्र गुर्राया और कुछ इन्कार और कुछ इसरार के बाद पांच-छः लेखकों और शायरों की वह टुकड़ी 'जज़्बी' के शे'रों पर दाद देने और सिर धुनने में मग्न हो गई।

'जज़्बी' और उसके समकालीन शायर की यह झड़प काव्य-विषय और उसके रूप के सम्बंध में हुई थी। उसका मित्र विषय को रूप पर प्रधानता दे रहा था और 'जज़्बी' रूप और विषय दोनों को बराबर का दर्जा देने के पक्ष में था। दोनों प्राचीन शायरों की कला-कृतियों के उदाहरण दे-दे कर अपनी

बात मनवाने का प्रयास कर रहे थे कि एक शे'र पर तकरार हो गई। 'जज़्बी' के विचार में वह शे'र कला की दृष्टि से घटिया श्रेणी का था और उसके मित्र के विचार में वह शे'र इसलिए उच्च-कोटि का था कि उसमें शायर ने बड़ी दो-टूक बात कही थी और उसका विषय प्रगतिशील था।

'जज़्बी' की शायरी के सम्बंध में आम धारणा यह है कि वह केवल आत्म-गत् अनुभूतियों का शायर है और जान-बूझ कर अपनी कला को बाह्य परिस्थितियों की पकड़ से बचाए रखना चाहता है। उसके यहां विषय पर रूप को महत्व दिया जाता है। और इस सम्बंध में एक बार एक समालोचक ने उसे 'केवल शब्दों का जौहरी' कहकर उसकी शायरी की निंदा की थी। एक और समालोचक ने उसे निराशावादी शायर सिद्ध करके 'फ़ानी' (उर्दू का एक प्रसिद्ध निराशावादी शायर) का चर्बा कहा था और एक और महाशय ने उसे अस्पष्ट-भाषी होने की उपाधि दी थी।

यह सही है कि ऊपरी ढंग से देखने से हमें 'जज़्बी' के यहां इन अवगुणों की झलक मिलेगी, लेकिन यदि हम उसकी शायरी का क्रमानुसार अध्ययन तथा मूल्यांकन करें और जैसा कि शायर का अधिकार है किंचित Imaginative sympathy से काम लें तो हमें 'जज़्बी' की शायरी पर उक्त प्रकार के 'फ़तवे' न केवल अनुचित नज़र आयेंगे बल्कि निराधार भी। हमें उसके यहां अन्तर्गति और कला का ऐसा सुन्दर समावेश मिलेगा जो उर्दू की नई पीढ़ी के बहुत कम शायरों के हिस्से में आया है और जिसके लिए एक-दो दिन की नहीं वर्षों की

तपस्या चाहिये। काव्य-रूप के साथ उसका मैत्रीपूर्ण व्यवहार (Friendly terms with the form), अतीत की महान् परम्पराओं को अपने सामाजिक वातावरण के साथ सम्बंधित देखने का बोध और जीवन की परगत् प्रेरणाओं की भट्टी में से तप कर निकला हुआ आत्मानुभव उसकी शायरी में इस प्रकार घुल-मिल गया है कि उसका हर शे'र हमें ठिठकने और सोचने पर विवश कर देता है।

अपने कविता-संग्रह 'फ़ुरोज़ां' की भूमिका में स्वयं उसने भी इस ओर संकेत किया है :

"एक शायर की हैसियत से हमारे लिए जो चीज़ सबसे ज़ियादा अहम है, वह ज़िन्दगी या ज़िन्दगी के तजुर्बात हैं। लेकिन कोई तजुर्बा उस वक़्त तक मौज़ू - ए - सुख़न (काव्य-विषय) नहीं बनता जब तक उसमें शायर को जज़्बे की शिद्दत (भावावेग) और एहसास (अनुभूति) की ताज़गी का यक़ीन न हो जाए। यही दोनों चीज़ें शायर को क़लम उठाने पर मजबूर करती हैं और अगर शायर के पास कोई अपना नुक़्ता-ए-नज़र (दृष्टिकोण) है तो उसकी झलक उसके जज़्बात में भी नज़र आयेगी। यह झलक कभी हल्की होगी, कभी गहरी, लेकिन होगी ज़रूर। क्योंकि जज़्बातो-एहसासात शायर की तनक़ीदी क़ुव्वतों (समालोचनात्मक शक्तियों) से बचकर नहीं निकल सकते। अक़्ल उन्हें शऊरी तौर पर (बोधात्मक ढंग से) परखती है। इस अमल (प्रक्रिया) के बाद शायर के नुक़्तानज़र का जज़्बातो-एहसासात में सरायत (प्रवेश) कर जाना लाज़मी है। यहां हल (समाधान) की वज़ाहत (व्याख्या)

ज़रूरी नहीं। अंदाज़े-बयान ख़ुद हल की ग़म्माज़ी (गवाही देना) करता है। दरिया का बहाव दुरुस्त होना चाहिये, कश्ती कशां-कशां किनारे से आ लगेगी।"

मुईन अहसन 'जज़्बी' का जन्म २१ अगस्त १९१२ को ज़िला आज़मगढ़ के एक गांव में हुआ। दादा डाक्टर अब्दुल ग़फ़ूर स्वयं शायर थे और 'मतीर' उपनाम से ग़ज़लें कहते थे। फूफी ख़ातून अकरम उर्दू के प्रसिद्ध लेखक 'राज़िक़-उल-ख़ैरी' की पत्नी थीं और स्वयं भी निबन्ध, कहानियां आदि लिखती थीं। इस प्रकार बचपन में ही घर के साहित्यिक वातावरण ने 'जज़्बी' पर अपना प्रभाव डाला और नौ-दस वर्ष की अल्प आयु में ही उसने तुक-बन्दी शुरू कर दी और सोलह वर्ष की आयु में तो बाक़ायदा ग़ज़लें कहने लगा।

'जज़्बी' का जीवन असह्य परिस्थितियों की लम्बी दास्तान है। उसने ऐसे दिन भी देखे हैं जब उसे सुबह की चाय तो किसी प्रकार प्राप्त हो गई लेकिन दोपहर के खाने के लिए छः छः मील पैदल चलकर किसी मित्र-मुलाक़ाती का मुँह देखना पड़ा और कभी-कभी तो फ़ाक़ों तक की नौबत आई। ट्यूशनें करके और पेट पर पत्थर बांधकर उसने एफ० ए० किया और एक नौकरी के सिलसिले में बरसों एक ज़िले से दूसरे ज़िले में, और एक शहर से दूसरे शहर में मारा-मारा फिरता रहा। प्रत्यक्ष है कि उसकी शायरी इस प्रकार की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती थी और यदि कुछ समालोचक उसे निराशावादी शायर सिद्ध करने के लिए उसके निम्न प्रकार के शे'रों का उदाहरण देते हैं :

मरने को दुआयें क्यों मांगूँ, जीने की तमन्ना कौन करे
ये दुनिया हो या वो दुनिया, अब ख़्वाहिशे-दुनिया कौन करे
जब कश्ती साबितो-सालिम थी, साहिल की तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे
दुनिया ने हमें छोड़ा 'जज़्बी', हम छोड़ न दें क्यों दुनिया को
दुनिया को समझ कर बैठे हैं, अब दुनिया-दुनिया कौन करे

तो एक तो वे शायर के पैरों पर खड़े होकर आलोचना करने का कष्ट नहीं करते और दूसरे उसके उसी काल के निम्न प्रकार के शे'रों पर आंखें मीच लेते हैं :

किसी से हाले - दिले - बेक़रार कह न सका
कि चश्मे-यास में आंसू भी आके बह न सका
न आए मौत ख़ुदाया तबाह-हाली में
ये नाम होगा ग़मे-रोज़गार[1] सह न सका

यों तो जज़्बी १९२९ ई० से शे'र कह रहा था और :

अल्लाह रे बेख़ुदी कि चला जा रहा हूं मैं
मंज़िल को देखता हुआ, कुछ सोचता हुआ

और

हुस्न हूं मैं कि इश्क़ की तस्वीर
बेख़ुदी ! तुझसे पूछता हूं मैं

ऐसे सुन्दर शे'र कह रहा था, लेकिन सन् १९३४ ई० तक उच्चकोटि के पत्रों के सम्पादक धन्यवाद सहित उसकी ग़ज़लें लौटाते रहे । फिर १९३४ ई० में जब किसी प्रकार 'हुमायूं'

---

१. संसार या जीविका का ग़म

(प्रसिद्ध मासिक पत्रिका—लाहौर) में उसकी—'मरने की दुआयें क्यों मांगूँ' वाली ग़ज़ल प्रकाशित हो गई तो एक-दम पाठक और लेखक सभी चौंक उठे और उस ग़ज़ल के बाद से उसकी गणना आधुनिक काल के प्रथम श्रेणी के शायरों में होने लगी। उसी ज़माने में उसने 'एक दोस्त से' और 'ऐ दोस्त' ऐसी सुन्दर नज़्में भी लिखीं, लेकिन सही मानों में उसकी प्रगतिशीलता[1] का प्रारम्भ १९३७ ई० में हुआ। उसके करुणा-भाव में सर्वव्यापकता पैदा हुई और उसकी क़लम से 'फ़ितरत एक मुफ़लिस की नज़र में' जैसी अर्थपूर्ण और जीवन्त नज़्म निकली :—

१. प्रगतिशीलता के सम्बन्ध में 'जज़्बी' का मस्तिष्क कितना स्पष्ट है, निम्नलिखित पंक्तियां इसका प्रमाण हैं :—

"प्रगतिशीलता को 'मार्क्सी दृष्टिकोण' के अतिरिक्त कुछ और समझना सख़्त ग़लती होगी। लेकिन यह दृष्टिकोण आसानी से पैदा नहीं होता। एक चीज़ को समझना इतना कठिन नहीं जितना उसे जीवन-सिद्धांत बनाना कठिन है। यह एक-दो दिन का काम नहीं। नये विचार पुराने विचारों की दुनिया में हलचल डाल देते हैं। इस हलचल पर क़ाबू पाने और वास्तविक क़ाबू पाने में एक समय लग जाता है, तब जाकर ऐसे मस्तिष्क का निर्माण होता है जो एक विशेष ऐनक से हर चीज़ पर नज़र डालता है। सोचने का ढंग कुछ इस प्रकार बदलता है कि हम किसी अन्य ढंग से सोच ही नहीं सकते। फिर भाव तथा बोध के नये सोते फूटते हैं। प्रगतिशील साहित्य की रचना इसी स्थान से होती है।"

['फ़ुरोज़ाँ' की भूमिका में से—अनुवाद]

वो ख़्वाह सुलगते हों शब-भर, वो ख़्वाह चमकते हों शब-भर
मैंने भी तो देखा है अक्सर, क्या बात नई है तारों में
ये चुप-चुप नर्गिस की कलियां, क्या जाने कैसी कलियां हैं
जो खिलती हैं जो हँसती हैं और फिर भी हैं बीमारों में
जब जेब में पैसे बजते हैं जब पेट में रोटी होती है
उस वक़्त ये ज़र्रा हीरा है, उस वक़्त ये शबनम मोती है
(पूरी नज़्म इस संकलन में शामिल है)

यही नहीं, उसकी उस काल की ग़ज़लों में भी नई दिशायें और नई अदायें उत्पन्न हुई। ज़रा दो शे'र देखिये :

इक यास[1] भरे दिल पर न हुई तासीर[2] तुम्हारी नज़रों की
इक मोम के बेहिस टुकड़े पर ये नाज़ुक ख़ंजर टूट गये
मेरी ही नज़र की मस्ती से सब शीशा-ओ-साग़र रक़्सां थे[3]
मेरी ही नज़र की गर्मी से सब शीशा-ओ-साग़र टूट गये

तात्पर्य यह है कि 'जज़्बी' की शायरी बराबर उन्नति करती रही। उसका व्यक्तिगत् ग़म सामूहिक ग़म में परिवर्तित होता रहा है। उसके यहां जो अनुभूतियां और भावावेग थे वे आज भी मौजूद हैं लेकिन आज उनपर बुद्धि का पहरा है और बुद्धि के पहरे तले उसकी अनुभूतियां और भावावेग जहां हमें जीवन को समझने में सहायता देते हैं, वहां उसके लिए उत्तम काव्य-विषय और काव्य-रूप जुटाते हैं। काव्य-रूप के सम्बंध में 'जज़्बी' बहुत चौकन्ना है और इस सम्बंध में किसी को क्या

१. निराशापूर्ण २. प्रभाव ३. शराब के प्याले और सुराहियां नाच रही थीं

वह अपने आप को भी क्षमा नहीं करता। अपने एक-एक शे'र को वह महीनों मांझता रहता है और उस समय तक प्रकाशनार्थ नहीं भेजता जब तक उसे पूरा विश्वास न हो जाये कि किसी दृष्टि से भी उस शे'र में कांट-छांट की गुंजाइश नहीं रही। लेकिन रूप पर इतना परिश्रम करने का मतलब यह नहीं है कि वह विषय को ओझल कर देता हो। हां, इस प्रसंग में वह पाठक से अपने संकेतों और व्यंजनाओं को समझने की मांग अवश्य करता है और उसकी मांग पूरी होते ही उसकी प्रत्येक बात बड़े सुन्दर और स्पष्ट-रूप से हमारे मस्तिष्क में उतर जाती है।

और जब आवारागर्दी के ज़माने में—

जब कश्ती साबितो-सालिम थी साहिल की तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे

—कहने वाले शायर को जीवन के विभिन्न मार्गों में भटकने के बाद अलीगढ़ विश्व-विद्यालय में एक लैक्चरर के रूप में आश्रय मिल जाता है और वह—

क्या तुझको पता क्या तुझको ख़बर दिन-रात ख़यालों में अपने
ऐ काकुले-गेती[1] हम तुझको जिस तरह संवारा करते हैं
ऐ मौजे-बला इनको भी ज़रा दो-चार थपेड़े हल्के से
कुछ लोग अभी तक साहिल से तूफ़ां का नज़ारा करते हैं

—कहता है और इसके बावुजूद जब उसका कोई समकालीन शायर या समालोचक उससे काव्य-विषय और काव्य-रूप के

१. दुनिया के केशों की लट (संसार)

सम्बंध में उलझ पड़ता है तो किसी अरिस्टोक्रेट होटल में बैठे होने पर भी उसका जी चाहता है कि वह उसके मुंह पर घूंसा जमा दे। लेकिन फिर कुछ क्षणों के बाद वह बड़े प्यार से अपने उस प्रतिद्वन्द्वी का हाथ दबाकर उससे कहने लगता है, "प्यारे! मैं शे'र कहना छोड़ दूंगा। आख़िर ऐसी शायरी से क्या फ़ायदा जो दोस्ताना ताल्लुक़ात भी क़ायम न रहने दे।"

चयन



मेरी शायरी और नक़्क़ाद[1]

ऐ मेरे शे'र के नक़्क़ाद तुझे है ये गिला
कि नहीं है मेरे एहसास में सरमस्ती-ओ-कैफ़[2]
कि नहीं है मेरे अन्फ़ास में[3] बू-ए-मय-ए-जाम[4]
चमन-ए-दहर की[5] तक़दीर की मैं हूँ वो घटा
जिसने सीखा हो नहीं अब्रे-बहारी का[6] ख़िराम[7]
रात तारीक[8] है और मैं हूँ वो इक शम्मे-हज़ीं[9]
जिसके शो'ले में नहीं सुबहे-दरख़्शां[10] का पयाम
मेरे फूलों में सबाओं[11] न बहारों का गुज़र
मेरी महफ़िल में न मुतरिब[12] न मुग़न्नी[13] का सरोद[14]
मेरे मयख़ाने में मौजे-मय-ए-उम्मीद[15] हराम
मैं वो नक़्क़ाश[16] हूँ खोया हुआ भटका हुआ नक़्क़ाश
जिसके हर नक़्श में[17], तख़ईल के[18] हर पैकर में[19]
मुस्कराती है बड़े नाज़ से रूहे-आलाम[20]

ऐ मेरे दोस्त मेरे ग़म के परखने वाले
बस चले मेरा तो ला दूं तुझे रूहे-गुले-तर[21]

---

१. आलोचक २. मादकता ३. श्वासों में ४. प्याले में भरी शराब की महक ५. संसार-रूपी उपवन की ६. वसन्त ऋतु के मेघ का ७. मंद गति ८. अंधेरी ९. शोकातुर दीपक १०. प्रकाशमान प्रभात ११. प्रभात-समीर १२, १३. गायक १४. संगीत १५. आशा-रूपी मदिरा की छलक १६. चित्रकार १७. चित्र में १८. कल्पना के १९. चित्र में २०. दुखों की आत्मा २१. फूल की आत्मा

बख़्श दूं अपनी तड़प, अपना जुनूं[१] , अपनी नज़र
फिर तुझे अपने शबो-रोज़ का[२] आलम[३] दिखलाऊं
हर तबस्सुम में[४] तुझे शायबा-ए-ग़म[५] दिखलाऊं
ख़ूने-नाहक़[६] पे जो होता है वो मातम दिखलाऊं
परतौए-ख़ुर् से[७] जो बे-जां है वो शबनम दिखलाऊं
तुझको दिखलाऊं कि बे-रंग है किस दर्जा सहर[८]

तीरा-ओ-तार[९] सी ये रात, भयानक-सी फ़ज़ा[१०]
डगमगाते हुए क़दमों को मेरे दोस्त बढ़ा
इक ज़रा और बुलंदी पे ख़ुदा-रा[११] आजा
देख इस वुसअ़ते-तारीक के[१२] सन्नाटे को
देवता मौत का खोले हुए जैसे शहपर[१३]
और इस वुसअ़ते-तारीक के सन्नाटे में
कोई छीने लिये जाता है सितारों की दमक
कोई बेनूर[१४] किए देता है शो'लों की लपक
कोई कलियों को मसलता है तो फिर क्या कीजे
ज़ख़्मे-गुल[१५] तुझको महकना है तो हँस-हँस के महक
कौन सय्याद की[१६] नज़रों से भला बचता है
ताइरे-गोशा-नशीं[१७] ! खूब चहक, खूब चहक

---

१. उन्माद २. रात-दिन का ३. हालत ४. मुस्कराहट में ५. ग़म की झलक ६. अनुचित वध ७. आहार के अभाव से ८. सुबह ९. अन्धकारपूर्ण १०. वातावरण ११. भगवान के लिए १२. अन्धकारपूर्ण विशालता के १३. पंख १४. प्रकाश-रहित १५. फूल के घाव १६. शिकारी की १७. एकांतवासी पक्षी

जागती ज़र्द-सी आंखें न कहीं लग जायें
दर्दे-इफ़लास[1] ! ज़रा और चमक और चमक
लालो-गौहर के[2] ख़ज़ाने भी कहीं भरते हैं
अरक़े-मेहनते-मजबूर[3] ! टपक, और टपक
है तेरे ज़ो'फ़ पे[4] कुछ मस्ती-ए-सहबा का[5] गुमां[6]
ऐ क़दम ! और बहक और बहक और बहक
वो चमकती हुई आई तेरे सर पर शमशीर
मिज़ा-ए-तिफ़लके-मासूम[7] झपक जल्द झपक
सीना-ए-ख़ाक में बेकार हुआ जाता है जज़्ब
रुख़े-बेदाद पे[8] ऐ ख़ून झलक आह झलक
क़तरा-क़तरा युंही टपकाता रहेगा कोई ज़हर
तू भी ऐ सब्र के साग़र युंही थम-थम के छलक
मौत का रक़्स[9] भी क्या चीज़ है ऐ शम्मे-हयात[10]
हां ज़रा और भड़क और भड़क और भड़क

हर तरफ़ कारगहे-दहर में[11] उठता है धुआं
हर तरफ़ मौत के आसार[12] तबाही के निशां

१. निर्धनता की पीड़ा (दुख) २. हीरों-मोतियों के ३. बेबस प्राणी के परिश्रम के पसीने ४. दुर्बलता पर ५. शराब की मस्ती का ६. भ्रम ७. अबोध बालक की पलक ८. अत्याचार के चेहरे पर ९. नृत्य १०. जीवन-रूपी दीपक ११. संसार-रूपी कार्यालय में १२. चिन्ह

सर्द अज्साम[1] बताते नहीं मंज़िल का पता
राहें वीरान हैं, मिलते नहीं राही के निशां
ज़ुल्मते-ग़म[2] है कि बढ़ती ही चली जाती है
हां मगर किसने जलाए हैं ये हिकमत के[3] दिये
आंखें चीखीं कि निकल आया वो उम्मीद का चांद
चौंका दीवाना कि दामाने-दरीदा को[4] सिये
दौड़ा मयख़्वार[5] कि इक जामे-मय-ए-तुंद[6] पिये
ख़्वाहिशे-मर्ग[7] मेरे सीने में होने लगी ज़िब्ह[8]
डूबते दिल ने दुआ मांगी कि कुछ और जिये

यक-ब-यक आंधियां उठने लगीं हर जानिब से
आन की आन में गहना गया उम्मीद का चांद
आन की आन में गुल हो गये हिकमत के दिये
न तो दीवाने का दामाने-दरीदा ही सिला
न तो मयख़्वार को इक क़तरा-ए-सहबा[9] ही मिला
बदलियां छटने न पाई थीं कि फिर छाने लगीं
बिजलियां सर पे उसी तौर से[10] लहराने लगीं

१. शरीर २. ग़म का अन्धेरा ३. बुद्धि के ४. फटे हुए दामन को
५. मद्यप ६. तेज़ शराब का प्याला ७. मृत्यु की इच्छा ८. वध
९. शराब की बूंद १०. तरह से

जिसके सीने में हों ऐ दोस्त हज़ारों नासूर
जीते-जी उसने भला चैन कभी पाया है
आह आई है मेरे लब पे तो क्योंकर रोकूं
क्या करूं अश्क अगर पलकों पे ढल आया है
लेकिन ऐ दोस्त ! मेरे दर्द के बे-हिस[1] नक़्क़ाद
मेरे आंसू, मेरी आंहें भी तो कुछ कहती हैं
मेरी अफ़सुर्दा[2] निगाहें भी तो कुछ कहती हैं
और दाग़े-दिले-नाकाम[3] दिखाऊं कैसे
दिले-खूंगश्ता का[4] पैग़ाम सुनाऊं कैसे

यूं तो कहने को ये आंसू हैं बस इक क़तरा-ए-आब[5]
जिनमें सुर्ख़ी दिले-पुरखूं की[6] न सोज़ो-तबो-ताब[7]
पर कोई नर्म-सा जब राग सुना देते हैं
यही आंसू हैं कि इक आग लगा देते हैं
चैन कब देती हैं अफ़सुर्दा निगाहें मेरी
आंधियां सीनों में भर देती हैं आहें मेरी

सब्र ऐ दोस्त ! अभी सर्द कहां ग़म की आग
लब तक आए भी तो जल जायेंगे सब ऐश के राग

१. अनुभूति-रहित २. उदास ३. विफल हृदय का दाग़ ४. घायल हृदय का ५. पानी की बूंद ६. रक्तिम हृदय की ७. सहनशीलता की आग

सब्र ऐ दोस्त कि इक ऐसा भी दिन आएगा
खास इक हद से गुज़र जाएगा पस्ती का शऊर[१]
सीना-ए-ख़ाक से[२] फिर उट्ठेगा वो शोरे-नुशूर[३]
गुंबदे-तीरा-ए-अफ़लाक[४] भी थर्राएगा
वो असीराने-बला का[५] दरे-ज़िंदां पे[६] हुजूम
कांपती-टूटती ज़ंजीरों पे रक़्से-बेरब्त[७]
रक़्से-बेरब्त में फिर रब्त[८] सा आ जायेगा
ग़ैर के साग़रे-ज़रपाश का[९] फिर जो भी हो हश्र[१०]
अपना ही जामे-सिफ़ालीं[११] कोई छलकायेगा
गेसु-ए-शाहिदे-गेती में[१२] पिरोकर मोती
कोई दीवानः बहुत दादे-जुनूं[१३] पायेगा
सब्र ऐ दोस्त कि इक ऐसा भी दिन आयेगा

अंजुमन बदलेगी, सब साज़ बदल जायेंगे
गाने वालों के भी अंदाज़ बदल जायेंगे

(१९४९)

◇ ◇ ◇

१. ज्ञान २. मिट्टी की छाती से ३. प्रलय का शोर ४. आकाश का अंधकारपूर्ण गुंबद ५. विपत्ति-ग्रस्तों का ६. कारागार के दरवाज़े पर ७. अनियमित नृत्य ८. क्रम ९. सुनहरी प्याले का १०. परिणाम, हाल ११. मिट्टी का प्याला १२. संसार-रूपी प्रिया के केशों में १३. उन्माद की प्रशंसा

मुत्रिबा[1]

नग़मा-ए-पुरकैफ़[2] लब पर[3], दस्ते-नाज़ुक[4] साज़ पर
मुत्रिबा ! क़ुर्बान हो जाऊं मैं इस अंदाज़ पर
गाते-गाते इक अदा के साथ रुक जाना तेरा
फिर उसी लय में उसी अन्दाज़ में गाना तेरा
रूठ कर, मन कर, लजाकर, मुस्करा कर नाज़ से
खैंच दी तस्वीर हर जज़्बे की[5] सौ अंदाज़ से
चितवनों से गाह[6] बरसा दीं बला की शोख़ियां
गाह भर लीं मस्त आंखों में हया की बिजलियां
गाह अबरू[7] ख़ंजरे-सफ़्फ़ाक[8] होकर रह गये
गाह आरिज़[9] अश्क से[10] नमनाक[11] होकर रह गये
गाह अपने रुख़ पे[12] डाला सुर्ख़ आंचल का नक़ाब
गाह अपनी बेहिजाबी से[13] किये पैदा हिजाब[14]
ज़ाहिदों के[15] दिल को छेड़ा अपने नग़मों से कभी
कारवाने - होश[16] लूटा अपने जल्वों से कभी
हाए फिर धीमे सुरों में भरके सहरे - सामरी[17]
फूंक दी हर ज़र्रा-ए-ईमां में[18] रूहे-काफ़री[19]

१. गायिका २. मस्ती-भरा गीत ३. होंट पर ४. नाज़ुक हाथ
५. मनोभाव की ६. कभी ७. भृकुटी ८. रक्तपाती खंजर ९. कपोल
१०. आंसुओं से ११. सजल १२. चेहरे पर १३. निर्लज्जता से
१४. लज्जतायें १५. विरक्तों के १६. होश का कारवान
१७. जादूगर का जादू १८. धर्म अथवा आस्तिकता के कण-कण में
१९. नास्तिकता की आत्मा

डूबे जाते हैं तेरे नग़मों में नग़मे साज़ के
किस बला की है कशिश[१], सदक़े तेरी आवाज़ के
क्या तेरी पुर-सोज़[२] लय में सबके दिल का दर्द है
जिसको देखो दम-बख़ुद[३] है, जिसको देखो ज़र्द है

कैफ़ो-मदहोशी[४] का इक तूफ़ान-सा हर दिल में है
सच तो ये है मुत्रिबा ! अब तू ही तू महफ़िल में है

(१९३३)

◇ ◇ ◇

१. आकर्षण २. दर्द भरी ३. आत्म-विभोर ४. मादकता और मदोन्मत्तता

एक दोस्त से...

अजीब हश्र बपा है[1] वफ़ा की दुनिया में,
नज़र उठा जो वहां तक तेरी नज़र जाए

न हो ज़माना में तेरे सिवा कोई जिसका
तुही बता वो तुझे छोड़कर किधर जाए

तेरे करम का[2] ज़माना तो हमने देख लिया
तेरे सितम का ज़माना भी अब गुज़र जाए

ग़रज़ तुझे कोई आए न आए महफ़िल में
तेरी बला से अगर कोई रूठकर जाए

न देख उस गुले-नाज़ुक को[3] इस तरह गुलचीं[4]
नसीमे-सुबह के[5] झोंके से भी जो डर जाए

ज़रा संभल के चमक ओ सहर के[6] अंगारे,
कि जामे-हस्ती-ए-शबनम[7] कहीं न भर जाए[8]

न देख उस निगहे-पुरफ़रेब से ज़ालिम
जो आबगीना-ए-दिल[9] चूर-चूर कर जाए

१. प्रलय मची है २. कृपा का ३. नाज़ुक फूल को ४. पुष्प-चयन करने वाला ५. प्रभात समीर के ६. सुबह के ७. ओस के जीवन का प्याला ८. (ओस की) मृत्यु न हो जाये ९. दिल-रूपी पानी का बुलबुला

तेरे तग़ाफ़ुले - पिनहाँ का[१] इक फ़साना है
वो चश्मे-शौक़[२] तेरी बज़्म से[3] जो तर जाए
नहीं ख़ुलूस की[४] मय जब तेरी निगाहों में
तो जामे-मय की तरफ़ क्यों मेरी नज़र जाए
तेरे फ़रेबे - ख़ुलूसो - वफ़ा के[५] सदक़े में
ख़ुदा करे कि मेरी ज़िन्दगी सुधर जाए
ये सोचकर मेरी पलकों पे रुक गया आंसू
कि रायगां[६] तेरी महफ़िल में क्यों गुहर[७] जाए
अजब बला में, अजब कश्मकश में है 'जज़्बी'
कि ऐसे दोस्त की ख़ातिर जिये कि मर जाए

(१९३५)

◇ ◇ ◇

१. छुपी उपेक्षा का २. शौक़-भरी आंख ३. सभा से ४. सच्ची मैत्री की ५. सच्चे-झूठे प्यार के धोके के ६. व्यर्थ ७. मोती

हुस्ने-बरहम[1]

मेरी नज़रों में है वो हुस्ने-बरहम
परीशां बाल वो ग़ुस्से का[2] आलम[3]
वो आंखों में शफ़क़ की[4] सुर्ख़ियां सी
वो आतिश-रेज़[5] नज़रें, बिजलियां सी
वो इक तूफ़ान चश्मे-फ़ितनागर में[6]
वो इक रूमान[7] बिफरी-सी नज़र में
वो बल खाया हुआ एक-एक फ़िक़रा[8]
हज़ारों नागनों का ज़हर—तौबा
वो ख़म खाए हुए[9] होंटों की गर्मी
तड़पकर रह गया जिसने नज़र की
निगह के हाथ में वो ताज़ियाना[10]
वो थर्राया हुआ सारा ज़माना
जबीने-ग़ैज़ पर[11] शिकनें[12] ही शिकनें
वो इक चढ़ते हुए दरिया की मौजें[13]
नफ़स[14] कुछ तेज़तर भी, गर्मतर भी
इक आंधी जिसमें शो'ला भी शरर[15] भी

---

१. क्रुद्ध सौन्दर्य २. क्रोध का ३. हालत ४. ऊषा की ५. आग बरसाने वाली ६. उपद्रवकारी आंख में ७. रोमांच ८. वाक्य ९. टेढ़े १०. कोड़ा ११. कोप के माथे पर १२. बल १३. लहरें १४. श्वास १५. चिंगारी

लपक शो'लों की रुख़सारों के[1] अन्दर
इक आतिश[2] और बहिश्ते-रूह-परवर[3]

शराबे-तुंद[4] रग-रग में भरी थी
जवानी आग होकर रह गई थी

यकायक कांप उठना बांकपन से
सबा की[5] छेड़ शम्मए-अंजुमन से[6]

अरक़-आलूद[7] पेशानी का[8] मन्ज़र[9]
वो कुछ शबनम के क़तरे बर्गे-गुल पर[10]

वो भर्राई हुई आवाज़े-नाज़ुक[11]
शिकस्ता[12] हो चला था साज़े-नाज़ुक[13]

लबों पर[14] कपकपी सी आ चली थी
घटा ख़ामोशियों की छा चली थी

दिले-नाज़ुक के तूफ़ानों को लेकर
ग़ज़ब-आलूद[15] अफ़सानों को लेकर

इक आंसू रफ़्ता-रफ़्ता[16] आ रहा था
समन्दर था कि सिमटा जा रहा था

(१९३६)

◇ ◇ ◇

१. कपोलों के २. आग ३. प्राणप्रद स्वर्ग ४. तेज़ शराब ५. प्रभात-समीर की ६. महफ़िल के दीपक से ७. पसीना भरा ८. माथे का ९. दृश्य १०. फूल की पंखड़ी पर ११. कोमल स्वर १२. भग्न १३. नाज़ुक साज़ १४. होंटों पर १५. क्रोध से भरे हुए १६. धीरे-धीरे

ऐ दोस्त !

ये अश्क[1] भरी आंखें मेरी, ये तेरा तबस्सुम[2] ग़म-आगीं[3]
शबनम ने जो कुछ छींटे से दिये मुर्झाई हुई कलियां भी खिलीं

गुलशन में गया मैं और वां से[4] गुञ्चों की ख़मोशी ले आया
और तू जो वहां जा निकला तो फूलों को हँसी तक दे आया

अब मैं भी चुप-चुप रहता हूं, अब तू भी चुप-चुप रहता है
जो दिल पे गुज़रती है मेरे वो तेरा दिल भी सहता है

दरिया की नज़र में मोती है, गर्दूं की[5] नज़र में तारा है
और मेरे लिए ऐ दोस्त तेरा हर आंसू इक अंगारा है

(१६३६)

◇ ◇ ◇

१. आंसू २. मुस्कान ३. चिन्तापूर्ण ४. वहां से ५. आकाश की

फ़ितरत एक मुफ़लिस की नज़र में

फ़ितरत के[१] पुजारी कुछ तो बता, क्या हुस्न है इन गुलज़ारों में[२]
है कौन सी रअ़नाई[३] आख़िर, इन फूलों में, इन ख़ारों में[४]
वो ख़्वाह[५] सुलगतें हो शब[६] भर, वो ख़्वाह चमकते हों शब भर
मैंने भी तो देखा है अक्सर, क्या बात नई है तारों में
इस चांद की ठंडी किरनों से मुझ को तो सुकूं[७] होता ही नहीं
मुझको तो जुनूं[८] होता ही नहीं, जब फिरता हूं गुलज़ारों में
ये चुप-चुप नर्गिस की कलियां, क्या जाने कैसी कलियां हैं
जो खिलती हैं, जो हँसती हैं और फिर भी हैं बीमारों में
ये लाल शफ़क़[९], ये लाला-ओ-गुल[१०] इक चिंगारी भी जिनमें नहीं
शो'ले भी नहीं, गर्मी भी नहीं, हैं तेरे आतिशज़ारों में[११]
उस वक़्त कहां तू होता है जब मौसमे-गर्मा का सूरज
दोज़ख की तपिश[१२] भर देता है, दरियाओं में, कुहसारों में[१३]
जाड़े की भयानक रातों में वो सर्द हवाओं की तेज़ी
हां वो तेज़ी, वो बेमेहरी[१४] जो होती है तलवारों में

---

१. प्रकृति के २. उपवनों में ३. सौन्दर्य ४. कांटों में ५. चाहे ६. रात ७. शान्ति ८. उन्माद ९. ऊषा १०. फूल ११. अग्नि-स्थलों १२. गर्मी १३. पर्वतीय देशों में १४. निर्दयता

दरिया के तलातुम का[१] मन्ज़र हां तुझको मुबारिक हो लेकिन
इक टूटी-फूटी कश्ती भी चकराती है मंझधारों में

कोयल के रसीले गीत सुने लेकिन ये कभी सोचा तूने,
हैं उलझे हुए नग़मे कितने इक साज़ के टूटे तारों में

बादल की गरज, बिजली की चमक, बारिश में वो तेज़ी तीरों की
मैं ठिठुरा सिमटा सड़कों पर, तू जाम-ब-लब[२] मयख्वारों में[३]

सब होशो-खिरद के[४] दुश्मन हैं, सब क़ल्बो-जिगर के[५] रहज़न[६] हैं
रक्खा है भला क्या इसके सिवा इन राहते-जां[७] महपारों में[८]

वो लाख हिलालों[९] से भी हसीं, कैसी ज़ोहरा[१०], कैसी परवीं[११]
इक रोटी का टुकड़ा जो कहीं मिल जाये मुझे बाज़ारों में

जब जेब में पैसे बजते हैं, जब पेट में रोटी होती है
उस वक़्त ये ज़र्रा हीरा है, उस वक़्त ये शबनम मोती है

(१९३७)

१. तूफ़ान का २. शराब पी रहा होता है ३. मद्यपों में ४. बुद्धि के ५. हृदय ६. डाकू ७. सुखप्रद ८. चांद के टुकड़ों (सुन्दरियों) में ९. दूज के चांद १०, ११. सितारों तथा स्त्रियों के नाम

चश्मे-सवाल[1]

हां ऐ ग़रीब लड़की तू भीख मांगती है
चश्मे-सवाल तेरी कुछ कह के झुक गई है
तू भीख मांगती है शर्मो-हया की मारी
और सर से लेके पा तक[2] है कपकपी सी तारी[3]
आंखों में है नमी सी, आईना सी जबीं[4] है
तुझको गदागरी की[5] आदत अभी नहीं है
क़िस्मत में गेसुओं की[6] आईना है न शाना[7]
शायद तेरी नज़र में तारीक[8] है ज़माना
ये तेरा जिस्मे-नाज़ुक बोसीदा[9] पैरहन में[10]
जैसे गुले - फ़सुर्दा[11] उजड़े हुए चमन में

झुक जायें तेरे आगे शैतान की निगाहें
पर खा रही हैं तुझको इन्सान की निगाहें
पाकीज़गी पे[12] तेरी सीता को प्यार आए
मासूमियत पे[13] तुझको मरियम गले लगाये

---

१. मांगती आंख २. पैर तक ३. छाई हुई ४. माथा ५. भीख मांगने की ६. केशों की ७. कंघा ८. अंधकार-पूर्ण ९. फटे हुए १०. लिबास में ११. मुर्झाया हुआ पुष्प १२. पवित्रता पर १३. भोलेपन पर

हूरें लपक के चूमें, पायें क़दम जो तेरे
हर नक़्शे-पा पे[1] तेरे सिजदे करें फ़रिश्ते

ऐ काश वो बताए है जिसकी ये ख़ुदाई
ये चश्मे-नर्गिसी[2] है या कासा-ए-गदाई[3]
लब[4] हैं कि पत्थरों के टुकड़े जमे हुए हैं
रुख़[5] हैं कि रहगुज़र के[6] बुझते हुए दिये हैं

(१६३७)

◇ ◇ ◇

---

१. पद-चिह्न पर २. नर्गिसी आंख ३. भीख का ठीकरा ४. होंट
५. कपोल ६. रास्ते के

ख़्वाबे-हस्ती[१]

वो ज़माने और थे जब तेरा ग़म सहता था मैं
जब तेरे होंटों की रंगीनी से कुछ कहता था मैं
जब तेरे बालों से घंटों खेलता रहता था मैं
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

यक-ब-यक[२] बिजली सी चमकी और नशेमन[३] लुट गया
तूने बरसों जिसको सींचा था वो गुलशन लुट गया
तूने मोती जिस में टांके थे वो दामन लुट गया
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

तुझको जिस दिल से मुहब्बत थी, वो अब दिल ही नहीं
रक़्स[४] जिसका तुझको भाता था वो बिस्मिल[५] ही नहीं
रंगे-महफ़िल तुझसे क्या कहिये वो महफ़िल ही नहीं
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

अब न वो शौक़े-तसव्वुर[६], अब न वो ज़ौक़े-फ़ुग़ां[७]
मिट रहे हैं रफ़्ता-रफ़्ता अहदे-रफ़्ता के[८] निशां
धुंदली-धुंदली सी नज़र आती हैं कुछ परछाइयां
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

१. जीवन का स्वप्न २. एकाएक ३. घोंसला ४. नृत्य ५. आहत ६. कल्पना का शौक़ ७. आर्त्तनाद की अभिरुचि ८. बीते दिनों के

ये जवानी, ये परीशानी, ये पैहम[1] इज़्तिराब[2]
बारहा उलझन में दौड़ा हूं सू-ए-जामे-शराब[3]
बारहा घबरा के छेड़ा है गुनाहों का रबाब[4]
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

रंगे-सहबा[5] और है, सहबा की मस्ती और है
ज़िक्रे-पस्ती[6] और है, एहसासे-पस्ती[7] और है
ख़्वाबे-हस्ती और है, ताबीरे-हस्ती[8] और है
भूल जा ऐ दोस्त, वो रंगीं ज़माने भूल जा

(१९३८)

१. निरंतर २. बेचैनी ३. शराब के प्याले की ओर ४. साज़
५. शराब का रंग ६. पतन की चर्चा ७. पतन का अनुभव ८. जीवन का स्वप्न-फल

ऐ काश !

शग़ले-मय[१] करता, पर ऐ काश न होता महसूस
तल्ख़ी-ए-ज़हर[२] भी तल्ख़ी-ए-मय-ए-नाब में[३] है
छेड़ता साज़, पर आगाह[४] न होता ऐ काश
इक शरारा सा भी हर जुंबिशे-मिज़राब में[५] है
काश दरिया की ख़मोशी से न आती आवाज़
इक तलातुम-सा[६] भी हर मौजे-तहे-आब में[७] है
अब्रे-निसियां का[८] बुरा हो, न बताता ऐ काश
आबरू नाम की हर गौहरे-नायाब में[९] है
चांदनी रातों में ये इल्म न होता ऐ काश
दाग़े-दर्यूज़ागरी[१०] सीना-ए-महताब में[११] है
महफ़िले-ऐश में ऐ काश न होता वाक़िफ़
किस क़दर रंगे-वफ़ा फ़ितरते-अहबाब[१२] में है

१. शराब द्वारा मनोविनोद २. विष की कड़वाहट ३. शराब की कड़वाहट में ४. परिचित ५. सितार बजाने के लिए उंगली में पहनने वाले छल्ले के हिलने में ६. तूफ़ान सा ७. पानी के नीचे की लहर में ८. भुलक्कड़ बादल का ९. अप्राप्य मोती १०. भीख मांगने का दाग़ ११. चांद की छाती में १२. मित्रों के स्वभाव में

काश कहती न ये मज़दूर की गुलरंग[1] नज़र
हसरते - ख्वाब[2] अभी दीदा-ए-बेख्वाब में[3] है
काश मुफ़लिस के तबस्सुम से[4] न चलता ये पता
कितने फ़ाक़ों की सकत[5] ग़ैरते-बेताब में[6] है
काश तोपों की गरज में न सुनाई देता
जज़्बा - ए - ग़ैरते - मज़लूम[7] अभी ख्वाब में है

काश उमड़े हुए अश्कों से[8] न होता ज़ाहिर
इक क़यामत - सी दिले - शायरे - बेताब में[9] है
(१९३९)

१. पुष्प-वर्ण २. सोने की आकांक्षा ३. अनिद्रित आंखों में ४. मुस्कान से ५. शक्ति ६. आतुर आत्म-सम्मान में ७. आहत व्यक्ति के आत्म-सम्मान की आत्मानुभूति ८. आंसुओं से ९. अधीर कवि के दिल में

बेज़ार निगाहें

अपने भीगे हुए रुख़सारों को[१] इक आह के साथ
मेरे जलते हुए होंटों पे न रक्खेगा कोई
लबे-रंगीं की[२] ख़मोशी पे न मैं बिगड़ूंगा
मेरी बेबाक-नवाई पे[३] न रूठेगा कोई
दिले-नाज़ुक के धड़कने की सुनूंगा न सदा[४]
मेरी घुटती हुई आंहों पे न चौंकेगा कोई
मेरी आहट पे लजाते हुए मेरी जानिब
डगमगाते हुए क़दमों से न आएगा कोई
मेरी वहशत के[५] तमाशे न उन्हें होंगे नसीब
उनके उलझे हुए बालों से न उलझेगा कोई
जिनसे आ जाता था मासूम निगाहों में ग़ुरूर
मेरी बेरब्त[६] सी उन बातों को तरसेगा कोई
दिले-नाशाद[७]! तेरी चुप से मगर क्या होगा
तेरी फ़र्याद भी समझा है, न समझेगा कोई
मैंने जाना था कि इस वक़्त बढ़ा है जो ये हाथ
अब मेरे हाथों से ये हाथ न खैंचेगा कोई
मैं तो समझा था कि ता-हश्र रहेगा अब साथ
मैं तो यूं ख़ुश था कि अब साथ न छोड़ेगा कोई

१. कपोलों को २. रंगीन होंटों की ३. स्पष्टवादिता ४. आवाज़
५. पागलपन के ६. अनर्गल ७. अप्रसन्न मन

फ़िक्र ही क्या जो किसी को नहीं मेरी पर्वा
क्या मुझे ग़म जो मेरा हाल न पूछेगा कोई
उनके उमड़े हुए अश्कों से मुझे क्या मतलब
मेरे बहते हुए आंसू जो न पोंछेगा कोई
वो जो खुद्दार हैं, खुद्दार रहें ऐ ग़मे-दिल
उनसे कहदो कि तुम्हें यूँ तो न चाहेगा कोई
दिले-नाशाद ! ये फिर अर्ज़े-वफ़ा की[1] ख्वाहिश
तेरी बातों को न मानेगा, न मानेगा कोई
अब तो भूले से भी ऐ दिल न वहाँ जाऊँगा
हाए उन खास निगाहों से न देखेगा कोई
डूबते चांद की सौगंद न जाऊंगा वहाँ
मेरी बेख्वाब[2] निगाहों को न समझेगा कोई
मैं न जाऊंगा, न जाऊंगा वहाँ ऐ शबे-ग़म[3]
इक सिसकते हुए दिल से तो न खेलेगा कोई

उनसे बेज़ार हैं 'जज़्बी' जो निगाहें मेरी
और तारीक[4] हुई जाती हैं राहें मेरी

(१६४१)

१. प्रेम-निवेदन की २. अनिद्रित ३. ग़म की रात ४. अंधेरी

मौत

अपनी सोई हुई दुनिया को जगा लूं तो चलूं
अपने ग़मख़ाने में[1] इक धूम मचा लूं तो चलूं
और इक जामे-मये-तल्ख़[2] चढ़ा लूं तो चलूं
अभी चलता हूं ज़रा ख़ुद को संभालूं तो चलूं

जाने कब पी थी, अभी तक है मये-ग़म का[3] ख़ुमार
धुंदला - धुंदला नज़र आता है जहाने - बेदार[4]
आंधियां चलती हैं, दुनिया हुई जाती है ग़ुबार
आंख तो मल लूं, ज़रा होश में आलूं तो चलूं

वो मेरा सह्र[5] , वो एजाज़[6] कहां है, लाना
मेरी खोई हुई आवाज़ कहां है, लाना
मेरा टूटा हुआ वो साज़ कहां है, लाना
इक ज़रा गीत भी उस साज़ पे गालूं तो चलूं

मैं थका - हारा था, इतने में जो आए बादल
किसी मतवाले ने चुपके से बढ़ा दी बोतल
उफ़ वो रंगीन पुरअसरार[7] ख़यालों के महल
ऐसे दो-चार महल और बना लूं तो चलूं

१. ग़मों के घर में २. कड़वी (बहुत तेज) शराब का प्याला
३. ग़म-रूपी शराब का ४. जागा हुआ संसार ५. जादू ६. चमत्कार
७. भेदपूर्ण

मुझसे कुछ कहने को आई है मेरे दिल की जलन
क्या किया मैंने ज़माने में नहीं जिसका चलन
आंसुओ ! तुमने तो बेकार भिगोया दामन
अपने भीगे हुए दामन को सुखा लूं तो चलूं

मेरी आंखों में अभी तक है मुहब्बत का ग़रूर
मेरे होंटों को अभी तक है सदाक़त का[1] ग़रूर
मेरे माथे पे अभी तक है शराफ़त का ग़रूर
ऐसे वहमों से भी अब ख़ुद को निकालूं तो चलूं

(१९४१)

◇ ◇ ◇

१. सत्य का

तवह्हुम*

उनके लहजे में[1] वो कुछ लोच, वो झनकार, वो रस
एक बेमक़सद[2] तरन्नुम के सिवा कुछ भी न था
कांपते होंटों में उलझे हुए मुब्हम[3] फ़िक़रे[4]
वो भी अंदाज़े-तकल्लुम के[5] सिवा कुछ भी न था
सैंकड़ों टीसें नज़र आती थीं जिस में मुझको
वो भी इक सादा तबस्सुम के सिवा कुछ भी न था
सर्दो-ताबिंदा[6] सी पेशानी[7], वो मचले हुए अश्क[8]
दिन में नूरे-महो-अंजुम के[9] सिवा कुछ भी न था
तुंद[10] आंहों के दबाने में वो सीने का उभार
एक यूंही से तलातुम के[11] सिवा कुछ भी न था
मैंने जो देखा था, जो सोचा था, जो समझा था
हाए 'जज़्बी' वो तवह्हुम के सिवा कुछ भी न था

(१९४१)

◇ ◇ ◇

*भ्रम १. स्वर में २. व्यर्थ ३. अस्पष्ट ४. वाक्य ५. बातचीत के ढंग के ६. ठंडी और उज्ज्वल ७. माथा ८. आंसू ९. चांद, सितारों के प्रकाश के १०. तेज़ ११. तूफ़ान के

तवाइफ़

अपनी फ़ितरत की[1] बुलंदी पे मुझे नाज़ है कब
हां तेरी पस्त-निगाही से[2] गिला है मुझको
तू गिरा देगी मुझे अपनी नज़र से वर्ना
तेरे क़दमों पे तो सिजदा भी रवा[3] है मुझको

तूने हर आन[4] बदलती हुई इस दुनिया में
मेरी पायन्दगी-ए-ग़म को[5] तो देखा होता
कलियां बेज़ार[6] हैं शबनम के तलव्वुन से[7] मगर
तूने इस दीदा-ए-पुरनम को[8] तो देखा होता

हाए जलती हुई हसरत ये मेरी आंखों में
कहीं मिल जाए मुहब्बत का सहारा तुझको
अपनी पस्ती का[9] भी एहसास, फिर इतना एहसास
कि नहीं मेरी मुहब्बत भी गवारा तुझको

और ये ज़र्द से रुख़सार[10], ये अश्कों की[11] क़तार
मुझसे बेज़ार, मेरी अर्ज़े-वफ़ा से[12] बेज़ार।

(१९४१)

◇ ◇ ◇

१. प्रकृति या स्वभाव की २. पतित दृष्टि से ३. उचित ४. प्रतिक्षण ५. ग़म की नित्यता को ६. असंतुष्ट ७. परिवर्तन-शीलता से ८. सजल नेत्रों को ९. पतन का १०. कपोल ११. आंसुओं की १२. प्रेम-निवेदन से

आज़ार[1]

क्या ख़बर थी ये तेरे फूल से भी नाज़ुक होंट
ज़हर में डूबेंगे, कुम्हलायेंगे, मुर्झायेंगे
किसको मालूम था, ये हश्र[2] तेरी आंखों का
नूर के[3] सोते भी तारीकी में[4] खो जायेंगे

तेरी ख़ामोश वफ़ाओं का सिला[5] क्या होगा
मेरे नाकर्दा[6] गुनाहों की सज़ा क्या होगी
क़हक़हे होंगे कि अश्कों की तरन्नुम - रेज़ी[7]
दिले-वहशी[8] ! तेरे जीने की अदा क्या होगी

कोई उलझा हुआ नग़्मा, कोई सुलझा हुआ गीत
कौन जाने लबे-शायर की[9] नवा[10] क्या होगी
हां मगर दिल है कि धड़के ही चला जाता है
इससे बढ़कर कोई तौहीने - वफ़ा क्या होगी

---

१. दुख, कष्ट, रोग २. प्रलय ३. प्रकाश के ४. अंधकार में
५. बदला ६. न किये हुए ७. संगीत की वर्षा ८. उन्मत्त दिल
९. शायर के होंटों की १०. आवाज़

और ये शोर गरजते हुए तूफ़ानों का
एक सैलाब[1] सिसकते हुए इन्सानों का
हर तरफ़ सैंकड़ों बल खाती धुएं की लहरें
हर तरफ़ ढेर झुलसते हुए अरमानों का

ज़िन्दगी और भी कुछ ख़्वार[2] हुई जाती है
अब तो जो सांस है आज़ार हुई जाती है

(१९४२)

१. बाढ़ २. अपमानित

मंज़िल तक

कितने बेख़्वाब[1] हसीनों की तसल्ली के लिए
बन्द होती हुई आंखों के सलाम आयेंगे
कितने जलते हुए गुलरंग-लबों की[2] ख़ातिर
सर्द होते हुए होंटों के पयाम आयेंगे
कितने अफ़सुर्दा[3] सितारों को बनाकर ख़ुरशीद[4]
कितने ख़ुरशीदे-दरख़्शां[5] लबे-बाम[6] आयेंगे
अपने सीने में छुपाए हुए लाखों ज़ुल्मात[7]
ज़ौ-फ़िगन[8] कितने अभी माहे-तमाम[9] आयेंगे
हर क़दम आगे बढ़ाने के लिए ख़ून की भेंट
ऐसे भी ऐ ग़मे-दिल कितने मुक़ाम आयेंगे

तिश्नगी[10] पीने पे मजबूर करे या न करे
ज़हर-आलूद[11] अभी सैंकड़ों जाम आयेंगे

(१९४५)

◇ ◇ ◇

---

१. अनिद्रित २. पुष्प-वर्ण होंटों की ३. खिन्न ४. सूरज ५. प्रकाशमान सूरज ६. छत पर ७. अंधकार ८. ज्योतिमान ९. पूरे चांद १०. तृष्णा ११. विष भरे

एहसास

आज ये क्यों मुझे एहसास है ऐ जाने-हया[1]
तेरी दोशीज़गी - ए - हुस्न[2] नहीं है मासूम
मौजे-कौसर[3] तेरी बातें हैं मगर ज़हर-आमेज़[4]
मुश्को-अंबर[5] तेरी सांसें हैं मगर हैं मसमूम[6]
तेरी पलकों पे लरज़ता तो है इक अश्क[7] मगर
आस्मानों में धड़कते ही नहीं क़ल्बे-नुजूम[8]
जो हवसनाक[9] रबाबों को झुलस देते थे
उन शरारों से तेरे गाते हुए लब[10] महरूम[11]
जिसमें पाकीज़गी-ए-ग़म के[12] दिये थे रोशन
तेरी आंखों की वो उजली-सी चमक है मा'दूम[13]
इक मुजस्सम[14] सी लताफ़त का[15] तसव्वुर[16] ऐ दोस्त
कल हक़ीक़त था मगर आज है कितना मौहूम[17]

तू न आज़ुर्दा[18] हो ऐ ग़ैरते - मरियम[19], कि अभी
ये तेरा शायरे - आज़ाद है पाबन्दे - रसूम[20]

(१९४६)

१. लज्जा की आत्मा (प्रेयसी) २. सुन्दरता का कौमार्य ३. स्वर्ग की एक नदी 'कौसर' की लहर ४. विष-मिश्रित ५. सुगंधि-पूर्ण ६. विषैली ७. आंसू ८. सितारों के हृदय ९. लोलुप १०. होंट ११. वंचित १२. ग़म की पवित्रता के १३. ग़ायब १४. साकार १५. मृदुलता का १६. कल्पना १७. मिथ्या १८. उदास १९. मरियम के से आत्म-सम्मान वाली २०. परम्पराओं के आधीन

मेरे सिवा

तू ही बतला कि भला मेरे सिवा दुनिया में
कौन समझेगा इन आँखों के तबस्सुम का[१] गुदाज़[२]
इन शरर-बार[३] निगाहों में मगर मेरे सिवा
देख पायेगा भला कौन करम के[४] अन्दाज़
जिन फ़ज़ाओं में[५] भटकते हैं ख़यालात तेरे
है वहां कौन बजुज़ मेरे[६] तेरा हम-परवाज़[७]
कौन पढ़ पायेगा तहरीरे - जबीने - शफ़्फ़ाफ़[८]
किसको मिल सकता है बे-वजह तग़ाफ़ुल का[९] जवाज़[१०]
कौन समझेगा बजुज़ मेरे तेरा हुज़नो-अलम[११]
जब तेरे दोश पे[१२] बिखरी भी न हो ज़ुल्फ़े-दराज़[१३]
तू ही बतला कि भला कौन समझ पायेगा
तेरे होंटों से बहुत दूर तेरी आह का राज़
जज़्ब होकर शबे-तारीक के[१४] सन्नाटे में
कौन इस तरह सुनेगा तेरे दिल की आवाज़

(१९४६)

◇ ◇ ◇

१. मुस्कान का २. मृदुलता ३. चिंगारियां बरसाती हुई ४. कृपा के ५. वातावरण में ६. मेरे सिवा ७. साथ उड़ने वाला ८. स्वच्छ माथे पर लिखी लिखावट (भाव) ९. उपेक्षा का १०. औचित्य ११. शोक, दुःख १२. कंधे पर १३. लम्बे केश १४. अंधेरी रात के

नया सूरज

(१५ अगस्त १९४७)

बड़े नाज़ से आज उभरा है सूरज
हिमालय के ऊंचे कलस जगमगाये
पहाड़ों के चश्मों को सोना बनाया
नया बल, नये ज़ोर इनको सिखाये
लिबासे-ज़री[1] आबशारों ने[2] पाया
नशेबी[3] ज़मीनों पे छींटे उड़ाये
घने ऊंचे-ऊंचे दरख़्तों का मन्ज़र
ये हैं आज सब आबे-ज़र में[4] नहाये

मगर इन दरख़्तों के साये में ऐ दिल
हज़ारों बरस के ये ठिठुरे से पौदे
हज़ारों बरस के ये सिमटे से पौदे
ये हैं आज भी सर्द, बेहाल, बेदम
ये हैं आज भी अपने सर को झुकाये

अरे ओ नई शान के मेरे सूरज
तेरी आब में और भी ताब आये

१. ज़रीदार वस्त्र २. झरनों ने ३. ढलवां ४. स्वर्णिम-जल में

तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
जो ऐसे दरख़्तों में भी राह पाये
जो ठिठुरे हुओं को, जो सिमटे हुओं को
हरारत[1] भी बख़्शे, गले भी लगाये

बड़े नाज़ से आज उभरा है सूरज
हिमालय के ऊंचे कलस जगमगाये
फ़ज़ाओं में होने लगी बारिशे-ज़र[2]
कोई नाज़नीं[3] जैसे अफ़शां[4] छुड़ाये
दमकने लगे यूं ख़लाओं के[5] ज़र्रे
कि तारों की दुनिया को भी रश्क[6] आये
हमारे उक़ाबों ने[7] अंगड़ाइयां लीं
सुनहरी हवाओं में पर फड़फड़ाये
फ़ुज़ूंतर[8] हुआ नश्शा-ए-कामरानी[9]
तजस्सुस की[10] आँखों में डोरे से आए
क़दम चूमने बर्क़ो-बाद[11], आबो-आतिश[12]
बसद-शौक़[13] दौड़े बसद-इज्ज़[14] आए

---

१. गर्मी २. स्वर्ण की वर्षा ३. सुन्दरी ४. शृंगार की एक सामग्री ५. शून्यताओं के ६. ईर्ष्या ७. गरुड़ों ने ८. और भी अधिक ९. सफलता का नशा १०. जिज्ञासा की ११. बिजली और हवा १२. पानी और आग १३. सैकड़ों (अत्यन्त) शौक़ के साथ १४. सैंकड़ों विनय के साथ

मगर बर्क़ों-ग्रातिश के साए में ऐ दिल
ये सदियों के ख़ुदरफ़्ता[1] नाशाद[2] ताइर[3]
ये सदियों के पर-बस्ता[4] बर्बाद ताइर
ये हैं ग्राज भी ग्रपने सर को छुपाये

ग्ररे ग्रो नई शान के मेरे सूरज
तेरी ग्राब में ग्रौर भी ताब ग्राये

तेरे पास ऐसी भी कोई किरन है
इन्हें पंजा - ए - तेज़ से[5] जो बचाये
इन्हें जो नये बालो-पर ग्राके बख़्शे
इन्हें जो नये सर से उड़ना सिखाये

(नवम्बर १९४७)

१. ग्रात्म-विस्मृत २. दुःखी ३. पक्षी ४. जिनके पंख बंधे
५. तेज पंजे से

राज़ो-नियाज़

तेरे गेसुओं को[1] परीशां करके
तुझे रश्के-संबुल[2] बनाया है मैंने
तेरे रुख़ पे[3] छिड़का है ख़ूने-तमन्ना
तेरे रुख़ का ग़ाज़ा बनाया है मैंने
तड़पती-हुई बिजलियों की चमक में
तुझे मुस्कराना सिखाया है मैंने
जबीं पर[4] तेरी सुर्ख़ टीका लगाकर
सितारों को नीचा दिखाया है मैंने
सुनाकर तुझे सामरी के[5] फ़साने
इन आंखों का जादू जगाया है मैंने
अगर मैं बना हूं मुहब्बत का दरिया
तुझे माहे-ताबाँ[6] बनाया है मैंने
झलकने लगे तेरी आंखों में मोती
यहां तक तुझे गुदगुदाया है मैंने
तेरी सादगी से परीशान होकर
तुझे शोख़ो-रंगीं बनाया है मैंने
तेरे शोख़ होंटों की मौजों से[7] अक्सर
मुहब्बत का तूफ़ां उठाया है मैंने

१. केशों को २. सुगंधित घास के लिए ईर्ष्या ३. चेहरे पर
४. माथे पर ५. जादूगरी के ६. चमकीला चांद ७. लहरों से

तेरी झूटी ख़फ़्गी का[1] था इल्म[2] मुझको
मगर तुझको सचमुच मनाया है मैंने
तुझे बेवफ़ाई का इल्ज़ाम देकर
वफ़ाओं को अपनी जताया है मैंने
तेरे हुस्न पर नुक्ता-चीनी भी की है
तुझे बेसबब भी कुढ़ाया है मैंने
सताकर, जलाकर, रुलाकर हँसाकर
तुझे मुद्दतों आज़माया है मैंने

◇ ◇ ◇

१. रोष का २. ज्ञान

ग़ज़लें

ग़म की तस्वीर बन गया हूं मैं
ख़ातिरे - दर्द - आश्ना[1] हूं मैं

हुस्न हूं मैं कि इश्क़ की तस्वीर
बेख़ुदी[2] ! तुझसे पूछता हूं मैं

आह फिर दिल की याद आई है
ज़र्रे-ज़र्रे को देखता हूं मैं

ज़ब्ते-ग़म[3] बेसबब नहीं 'जज़्बी'
ख़लिशे - दिल[4] बढ़ा रहा हूं मैं

(१९२९)

१. दुःखों, पीड़ाओं का स्वागत करने वाला २. आत्म-विस्मृति
३. दुख का निग्रह ४. दिल की वेदना

दिल को होना था जुस्तजू में ख़राब
पास थी वर्ना मंज़िले - मक़सूद[1]

तेरी रुसवाई का है डर वर्ना
दिल के जज़्बात तो नहीं महदूद[2]

दिले - नाकाम थक के बैठ गया
जब नज़र आई मंज़िले - मक़सूद

तेरे जल्वों की हद मिली तो कब
हो गई जब नज़र भी लामहदूद[3]

मिल गया उनका नक़्शे-पा 'ज़ज़्बी'
हो गया जिस जगह मैं सर-बसजूद[4]

(१६२६)

◇ ◇ ◇

१. अभीष्ट स्थान २. सीमित ३. असीम ४. माथा टेक दिया

दाग़े-ग़म[१] दिल से किसी तरह मिटाया न गया
मैंने चाहा भी मगर तुमको भुलाया न गया

उम्र-भर यूँ तो ज़माने के मसाइब[२] झेले
तेरी नज़रों का मगर बार[३] उठाया न गया

रूठने वालों से इतना कोई जाकर पूछे
ख़ुद ही रूठे रहे या हमसे मनाया न गया

फूल चुनना भी अबस[४], सैरे-बहारां[५] भी फ़जूल
दिल का दामन ही जो कांटों से बचाया न गया

उसने इस तरह मुहब्बत की निगाहें डालीं
हमसे दुनिया का कोई राज़ छुपाया न गया

थी हक़ीक़त में[६] वही मंज़िले-मक़सद[७] 'जज़्बी'
जिस जगह तुझसे क़दम आगे बढ़ाया न गया

(१९३०)

१. ग़म का दाग़ २. दुख ३. बोझ ४. व्यर्थ ५. वसन्त की सैर ६. वास्तव में ७. अभीष्ट स्थान

जहां तक आखरी नज़रें तेरी मुश्किल से पहुंची हैं
वही मंज़िल की हद है ख़्वाबे-मंज़िल[1] देखने वाले

दिले-बेताब की[2] इक-इक तड़प महशर-बदामां[3] है
ज़रा मुंह फेर लेना रक़्से-बिस्मिल[4] देखने वाले

अभी तूफ़ान उठता है, अभी कश्ती उलटती है
अभी साहिल नज़र आता है साहिल देखने वाले

तलिस्मे-राहे-उल्फ़त[5] और फ़रेबे-शौक़[6], अरे तौबा !
अभी तो मुद्दतें भटकेंगे मंज़िल देखने वाले

मेरी दिक़्क़त - पसंदी[7] देख, मेरा मुस्कराना देख
निगाहे-यास से[8] ओ मेरी मुश्किल देखने वाले

(१९३०)

१. मंज़िल का सपना २. अधीर मन की ३. प्रलय मचाने वाली ४. आहत का नृत्य ५. प्रेम-मार्ग का जादू ६. प्रेम का धोखा ७. कठिनाई-प्रियता ८. निराशा भरी नज़रों से

साक़िया शीशों में[१] तेरे है न पैमानों में[२] है
वो ख़ुमारे-तिश्नगी[३] जो दिल के अरमानों में है

अपनी हस्ती की[४] हक़ीक़त[५] क्या, मैं दुनियां फूंक दूं
काश ! मिल जाये वो सोज़े-ग़म[६] जो परवानों में है

गिरया-ए-पैहम पे[७] मेरे मुस्कराता है कोई
अल्ला-अल्ला कितनी रंगीनी इन अफ़सानों में है

चाक ही करना है[८] तो दामाने-वहशत[९] चाक कर
वर्ना क्या है दामनों में क्या गिरेबानों में है

(१९३१)

◇ ◇ ◇

१. बोतलों में २. प्यालों में ३. पिपासा का मदिरालस ४. अस्तित्व की ५. वास्तविकता ६. ग़म की जलन ७. निरन्तर आर्त्तनाद पर ८. फाड़ना ही है ९. उन्माद का दामन

शिकवा[1] क्या करता कि उस महफ़िल में कुछ ऐसे भी थे
उम्र भर जो अपने ज़ख़्मों पर नमक छिड़का किये

तालिबे - तस्कीनो - हमदर्दी[2] थे बेज़ाराने - ज़ीस्त[3]
हम फ़रेबे - जोशे - उल्फ़त[4] याद करके हँस दिये

ये हवा की सनसनाहट, बिजलियों की ये चमक
हो गये अजज़ा परीशां[5] क्या मेरी फ़र्याद के

(१९३०)

◇ ◇ ◇

सवाले-शौक़ पे[6] कुछ उनको इज्तिनाब[7] सा है
जवाब ये तो नहीं है मगर जवाब-सा है

बता दे इतना फ़क़त[8] मुझको ख़ीरगी-ए-निगाह[9]
ये आफ़ताब[10] है कोई, कि आफ़ताब-सा है

(१९३१)

◇ ◇ ◇

१. शिकायत २. सहानुभूति और दिलासे के इच्छुक ३. जीवन के प्रति उदासीन ४. प्रेमावेश का धोखा ५. तत्व बिखर गये ६. प्यार की मांग ७. विरक्ति, उदासीनता ८. केवल ९. नजर की चकाचौंध १०. सूरज

संभलने दे ज़रा बेताबी-ए-दिल[1]
नज़र आते हैं कुछ आसारे-मंज़िल[2]

कुछ इस अंदाज़ से तड़पा मेरा दिल
लरज़ के[3] रह गई शमशीरे-क़ातिल[4]

उठाया था नक़ाबे-रुख़[5] किसी ने
यहां तक बाख़बर[6] थे अहले-महफ़िल

गिरा पड़ता हूँ क्यों हर-हर क़दम पर
इलाही ! आ गई क्या पास मंज़िल

(१९२९)

१. हृदय की अधीरता २. मंज़िल के चिह्न ३. कपकपाकर
४. हत्यारे की तलवार ५. मुख का पर्दा ६. अभिज्ञ

फ़ुज़ूल राज़ मुहब्बत का सब
बुझाये जो न बुझे आग वो बुझाते हैं

मैं जितना राहे-मुहब्बत से हटता जाता हूं
वो उतने ही मेरे नज़दीक आए जाते हैं

संभाल जज़्बा-ए-ख़ुद्दारी-ए-दिले-महज़ूं[1]
किसी के सामने फिर अश्क[2] आए जाते हैं

तुम्हारे हुस्न के जल्वों की शोखियां तौबा
नज़र तो आते नहीं, दिल पे छाए जाते हैं

हज़ार हुस्न की फ़ितरत से[3] हो कोई आगाह[4]
निगाहे-लुत्फ़ के[5] सब ही फ़रेब खाते हैं

शिकस्ता-दिल[6] ही के नग़मे तो हैं वो ऐ 'जज़्बी'
जिन्हें वो सुनते हैं और झूम-झूम जाते हैं

(१९३०)

१. दुःखित दिल के स्वाभिमान की भावना २. आंसू ३. स्वभाव से ४. परिचित ५. प्रेयसी की नज़र के ६. भग्न-हृदय

आह की दिल ने न फिर शिकवा-ए-बेदाद[1] किया
जब से शर्मीली निगाहों ने कुछ इर्शाद किया[2]

दास्ताने-शबे-ग़म[3] क़िस्सा-ए-तूलानी[4] है
मुख़्तसर ये है कि तूने मुझे बर्बाद किया

हो न हो दिल को तेरे हुस्न से कुछ निस्बत[5] है
जब उठा दर्द तो क्यों मैंने तुझे याद किया

(१९२९)

◇ ◇ ◇

कवा ज़बान से न कभी आशना[6] हुआ
नज़रों से कह दिया जो मेरा मुद्दआ[7] हुआ

ल्लाह री बेख़ुदी[8] कि चला जा रहा हूं मैं
मंज़िल को देखता हुआ कुछ सोचता हुआ

र ऐ दिले-शिकस्ता[9] कोई नग़मा छेड़ दे
फिर आ रहा है कोई इधर झूमता हुआ

(१९३०)

◇ ◇ ◇

---

१. अत्याचार की शिकायत २. कहा ३. ग़म की रात का वृत्तान्त ४. लम्बी कहानी ५. सम्बन्ध ६. परिचित ७. मनोरथ ८. आत्म-विस्मृति ९. भग्न-हृदय

इन्तहा-ए-ग़म में[१] मुझको मुस्कराना आ गया
हाथ इख़्फ़ा-ए-मुहब्बत का[२] बहाना आ गया

इस तरफ़ इक आशियाने की[३] हक़ीक़त[४] खुल गई
उस तरफ़ इक शोख़ को बिजली गिराना आ गया

रो दिये वो ख़ुद भी मेरे गिरया-ए-पैहम पे[५] आज
अब हक़ीक़त में[६] मुझे आंसू बहाना आ गया

मेरी ख़ाके-दिल[७] भी आख़िर उनके काम आ ही गई
कुछ नहीं तो उनको दामन ही बचाना आ गया

वो ख़राशे-दिल[८] जो ऐ 'जज़्बी' मेरी हमराज़[९] थी
आज उसे भी ज़ख़्म बनकर मुस्कराना आ गया

(१९३१)

◇ ◇ ◇

ख़जिल[१०] ख़ताओं पे[११] होकर कभी ख़ता करके
हज़ार बार मनाया उन्हें ख़फ़ा करके
ख़याले-बेअसरी-ए-दुआ[१२] मआज़-अल्लाह[१३]
कि हाथ उठे के उठे रह गये दुआ करके

(१९३१)

◇ ◇ ◇

१. ग़म के आधिक्य में २. प्रेम प्रकट न होने देने का ३. नीड़ की ४. वास्तविकता ५. निरन्तर आर्त्तनाद पर ६. वास्तव में ७. जले दिल की राख ८. दिल का छिलना (हृदय का घाव) ९. भेदी १०. लज्जित ११. दोषों पर १२. प्रार्थना के प्रभाव-रहित होने का विचार १३. ख़ुदा की पनाह !

ऐश से कुछ ख़ुश हुए क्यों ग़म से घबराया किये
ज़िन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किये
नाला-ए-बेताब[१] लब तक[२] आते आते रह गया
जाने क्या शर्मीली नज़रों से वो फ़र्माया किये
इश्क़ की मासूमियों का ये भी इक अंदाज़ था
हम निगाहे-लुत्फ़े-जानां से[३] भी शर्माया किये
नाख़ुदा[४] बेख़ुद[५], फ़ज़ा[६] ख़ामोश, साकित[७] मौजे-आब[८]
और हम साहिल से थोड़ी दूर पर डूबा किये
वो हवायें, वो घटायें, वो फ़ज़ा वो उसकी याद
हम भी मिज़राबे-अलम से[९] साज़े-दिल छेड़ा किये
मुख़्तसर ये है हमारी दास्ताने - ज़िन्दगी
इक सुकूने-दिल की[१०] ख़ातिर उम्र-भर तड़पा किये
काट दी यूं हमने 'जज़्बी' राहे-मंज़िल काट दी
गिर पड़े हर गाम पर[११], हर गाम पर संभला किये

(१९३१)

१. आतुर आर्तनाद २. होंटों तक ३. प्रेयसी की प्रेम-भरी नज़रों से ४. मांझी ५. उन्मत्त ६. वातावरण ७. निश्चेष्ट ८. पानी की लहर ९. दुख-रूपी छल्ले (सितार बजाने के लिए उंगली में पहिनने के छल्ले) से १०. मन की शान्ति की ११. डग पर

अपनी निगाहे-शौक़ को[१] रुसवा[२] करेंगे हम
हर दिल को बेक़रारे-तमन्ना[३] करेंगे हम

हां आपको उठाना पड़ेगी निगाहे-लुत्फ़[४]
क्या मुफ़्त अपने राज़ को अफ़शा[५] करेंगे हम

ख़लवत-कदे में[६] दिल के बिठा देंगे हुस्न को
और अपने जल्वे[७] अंजुमन-आरा करेंगे[८] हम

ऐ हुस्न हमको हिज्र की[९] रातों का ख़ौफ़[१०] क्या
तेरा ख़याल जागेगा सोया करेंगे हम

ये दिल से कह के आहों के झोंके निकल गये
उनको थपक-थपक के सुलाया करेंगे हम

(१९३२)

◇ ◇ ◇

१. प्रेम की नज़र को २. बदनाम ३. चाहत के लिए अधीर ४. प्रेम की नज़र ५. प्रकट ६. एकांतवास में ७. छब ८. भरी सभा में दिखायेंगे ९. वियोग की १०. भय

तुझी से दादे-वहशत लें[1], तुझी को मेहरबां कर लें
जुनूने-शौक़ में[2] जो चाहें हम ऐ आस्मां[3] कर लें

जो आए दिल में सब जज़्बे-निगाहे-नातवां[4] कर लें
हम अर्ज़े-शौक़ से[5] पहले न उनको राज़दां[6] कर लें

शिकस्ता साज़ छेड़ें अपनी आंखें गुलफ़िशां[7] कर लें
वो आयें या न आयें, हम तो बज़्म-आराइयां कर लें[8]

मेरी नज़रों में ख़ाके - आशियां[9] भी आशियां होगी
जिन्हें है बिजलियों का ख़ौफ़ फ़िक्रे-आशियां कर लें

तलाफ़ी[10] कुछ न कुछ हो जाये तकलीफ़े-तबस्सुम की[11]
ज़रा ठहरो हम अपने दामनों की धज्जियां कर लें

हवा-ए-गर्म ! कुछ मोहलत दे इन मासूम गुञ्चों को
कि थोड़ी देर तो नज़्ज़ारा-ए-रंगे-जहां कर लें[12]

(१६३२)

◇ ◇ ◇

१. उन्माद की प्रशंसा प्राप्त करें २. प्रेमोन्माद में ३. आकाश (संसार) ४. अशक्त नज़र में आत्मसात् ५. प्रेम के प्रकटीकरण से ६. भेदी ७. फूल बरसाती हुई ८. सभा सजा लें ६. घोंसले की मिट्टी १०. क्षति-पूर्ति ११. मुस्कराहट के कष्ट की १२. संसार के रंग-ढंग को देख लें

अ़ता[1] किया है जो दिले-दर्द-आशना[2] हमको
करम के[3] पर्दे में ज़ालिम न आज़मा हमको

दिखा रही है मुहब्बत के सब नशेबो-फ़राज़[4]
बहुत अज़ीज़[5] है ये आहे-नारसा[6] हमको

हमीं हैं सोज़, हमीं साज़, औ' हमीं नग़मा
ज़रा संभल के सरे-बज़्म[7] छेड़ना हमको

मआल[8] कुछ भी मुहब्बत का हो मेरी, यारब
न याद आए मुहब्बत की इब्तिदा हमको

न लुत्फ़ ज़ीस्त का[9] हासिल, न मौत की तल्ख़ी
ख़बर नहीं ग़मे-उल्फ़त ने क्या दिया हमको

जबीने-शौक़ के[10] सिजदे हैं ज़र्रे-ज़र्रे पर
बला से गर न मिला तेरा नक़्शे-पा[11] हमको

झुकी रही निगहे-शौक़ मुजरिमों की तरह
गुज़र गया कोई हैरत से देखता हमको

हज़ार बार किया अ़ज़्मे-तर्के-नज़्ज़ारा[12]
हज़ार बार मगर देखना पड़ा हमको

शिगुफ़्तगी[13] ही नहीं जब मिज़ाज में 'जज़्बी'
भुला ही देंगे ये सब दोस्त-आशना[14] हमको

(१९३३)

---

१. प्रदान २. दुख अनुभव करने वाला ३. कृपा के ४. ऊंच-नीच ५. प्रिय ६. न पहुंचने वाली आह ७. सभा में ८. परिणाम ९. जीवन का १०. आदर अथवा प्रेम-भरे मस्तक के ११. पद-चिह्न १२. न देखने का संकल्प १३. प्रफ़ुल्लता १४. परिचित

इक बन गया फ़रज़ाना[1], इक हो गया सौदाई
था जितना जो ज़र्फ़[2] उसमें उतनी ही शराब आई
इज़हारे-मुहब्बत पर[3] इस तरह वो शर्माये
सब उनकी हया मेरी आंखों में उतर आई
शर्मिंदा निगाहों में, उमड़े हुए अश्कों में
अपनी ही मुहब्बत की तौहीन नज़र आई
रो-रो के डराते हैं रुसवाई - ए - आलम से[4]
हँस-हँस के मिटाते हैं यारा - ए - शिकेबाई[5]
पाबंदे-वफ़ा[6] रो ले अब ज़ब्ते-मुहब्बत को[7]
हँसती हुई आती है वो दूर से रुसवाई
दामाने - तमन्ना को[8] हमरंगे - शफ़क़[9] कर दे
रोना है तो इतना रो ऐ चश्मे-तमन्नाई[10]
कुछ दिल को मुहब्बत में मिटने का खयाल आया
कुछ तेरे तग़ाफ़ुल ने[11] की हौसला-अफ़ज़ाई[12]
कैफ़ीयते-हिज्रां की[13] मे'राज[14] है ऐ 'जज़्बी'
महफ़िल में नज़र आए जब आलमे-तनहाई[15]

(१९३३)

◇ ◇ ◇

---

१. बुद्धिमान २. बर्तन ३. प्रेम के प्रकटीकरण पर ४. संसार की बदनामी से ५. सन्तोष अथवा धैर्य की शक्ति ६. प्रेम निभाने वाले ७. प्रेम को मन ही मन दबाये रखने को ८. चाह-रूपी दामन को ९. ऊषा-वर्ण १०. इच्छुक नेत्र ११. उपेक्षा ने १२. साहस बढ़ाया १३. वियोग की हालत की १४. पराकाष्ठा १५. एकांत की हालत

दिल ने इत्मीनान की इक सांस ली
हर निगह जब उसकी क़ातिल हो गई

आज हर बातिल[1] हक़ीक़त बन गया
हर हक़ीक़त आज बातिल हो गई

हम मुक़ाबिल तेरे आते क्या मजाल
तेरी सूरत ही मुक़ाबिल हो गई

अब तो उनकी भी ज़बाँ खुलती नहीं
मेरी मुश्किल उनकी मुश्किल हो गई

तेरा अंदाज़े-तकल्लुम[2] यक तरफ़[3]
तेरी ख़ामोशी भी क़ातिल हो गई

(१९३३)

१. असत्य २. बातचीत का ढंग ३. एक ओर

मरने की दुआयें क्यों मागूँ, जीने की तमन्ना कौन करे
ये दुनिया हो या वो दुनिया, अब ख़्वाहिशे-दुनिया कौन करे

जब कश्ती साबित-ओ-सालिम थी, साहिल की तमन्ना किसको थी
अब ऐसी शिकस्ता[1] कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे

जो आग लगाई थी तुमने, उसको तो बुझाया अश्कों ने[2]
जो अश्कों ने भड़काई है, उस आग को ठंडा कौन करे

दुनिया ने हमें छोड़ा 'जज़्बी' हम छोड़ न दें क्यों दुनिया को
दुनिया को समझ कर बैठे हैं, अब दुनिया-दुनिया कौन करे

(१९३३)

◇ ◇ ◇

उन्हें तो फूंक दे ऐ बर्क़-आशियां-दुश्मन[3]
जो आशियां तेरी ज़द पर[4] बना नहीं सकते
इक ऐसा राज़ दिया है मुझे छुपाने को
जिसे वो चाहें तो ख़ुद भी छुपा नहीं सकते
वो दूर हैं जिन्हें दावा-ए-क़ुर्ब[5] है तुझसे
वो पास हैं जो तेरे पास आ नहीं सकते

(१९३४)

◇ ◇ ◇

---

१. टूटी-फूटी २. आंसुओं ने ३. घोंसले की शत्रु बिजली ४. मार या पहुंच की सीमा-रेखा के अन्दर ५. सामीप्य का दावा

किसी से हाले - दिले - बेक़रार कह न सका
कि चश्मे-यास में[1] आंसू भी आके बह न सका

न आए मौत ख़ुदाया तबाह-हाली में
ये नाम होगा ग़मे-रोज़गार[2] सह न सका

(१६३४)

◇ ◇ ◇

ग़मों की दुनिया को रौंद डालें, निशाते-दिल[3] पायमाल[4] कर लें
नई मुहब्बत, नया जुनूं[5] है, ख़ुदाया क्या अपना हाल कर लें
जो चार आंखें करो तो जानें, नज़र मिलाकर हँसों तो जानें
क़सम तुम्हारी अगर न तुमको शरीके-रंजो-मलाल[6] कर लें
अजीब अरमां, अजीब हसरत, अजीब ख्वाहिश, अजीब वहशत[7]
कि बन पड़े तो उन्हें भी अपनी तरह सरापा मलाल[8] कर लें
वो एक लम्हा[9] , वो एक साअत[10], हुआ था जब उनसे अहदे-उल्फ़त[11]
उसे भी क्या ऐ ख़ुदा-ए-राहत[12] शरीके-ख्वाबो-ख़याल[13] कर लें

(१६३५)

◇ ◇ ◇

---

१. निराशापूर्ण आंख में २. संसार या जीविका का ग़म
३. दिल की प्रसन्नता ४. रौंद डालें ५. उन्माद ६. अपने दुख में शामिल ७. उन्माद ८. सिर से पैर तक शोकग्रस्त ९, १०. क्षण
११. प्रेम-प्रतिज्ञा १२. सुखों के मालिक १३. सपनों, कल्पनाओं में शामिल

तुझ से नज़र मिला के दीवाना हो गया मैं
कुछ राज़ बन गया कुछ अफ़साना हो गया मैं
अपने लिए बहाया ख़ूने-जिगर तो क्या ग़म
तेरे लिए तो रंगीं अफ़साना हो गया मैं
हां अब उठा रहे हैं दीवानावार[1] नज़रें
जब तुमसे तंग आकर दीवाना हो गया मैं
ये सोचकर कि शायद परवानावार[2] आओ
अफ़सुर्दा[3] सा चिराग़े-ग़मख़ाना[4] हो गया मैं
हटकर ग़मों से अक्सर ठुकरा दिया ग़मों को
अक्सर ग़मों से घट कर दीवाना हो गया मैं
तेरी नज़र में रहकर इक राज़ बन गया था
गिरकर तेरी नज़र से अफ़साना हो गया मैं
इक बार और देखा, हसरत से उनकी जानिब
फिर रफ़्ता-रफ़्ता[5] उनसे बेगाना हो गया मैं
अब तो मेरी ख़मोशी सब कह चुकी है तुमसे
अब तो सुना-सुनाया अफ़साना हो गया मैं
है काल आंसुओं का क्यों चश्मे-ग़म में 'जज़्बी'
किस रिंदे-तिश्ना-लब का[6] पैमाना हो गया मैं

(१९३६)

◇ ◇ ◇

१. पागलों की तरह २. पतंगों की तरह ३. उदास ४. शोकपूर्ण (मेरे) घर का दीपक ५. शनैः-शनैः ६. प्यासे मद्यप का

आह भी इक कोशिशे - नाकाम है मेरे लिए
ऐसी सहबा-ए-कुहन[१] और ख़ाम[२] है मेरे लिए
ज़िन्दगी इक शोरिशे - आलाम[३] है मेरे लिए
जो नफ़स[४] है गर्दिशे - अय्याम[५] है मेरे लिए
शायरी ही वजहे-नंगो-नाम[६] है मेरे लिए
और जो कुछ है वो सब इल्ज़ाम है मेरे लिए
मेरी अर्ज़े-शौक़[७] बेमानी[८] है उनके वास्ते
उनकी ख़ामोशी भी इक पैग़ाम है मेरे लिए
ये मेरी आशुफ़्ता-हाली[९] , ये मेरी आवारगी
जैसे सारी गर्दिशे-अय्याम है मेरे लिए
किस क़दर मासूम, कैसी गर्म, कितनी दिल-नवाज़[१०]
वो निगाहे-नाज़[११] जो बदनाम है मेरे लिए
आज क्या होने को है ऐ गर्दिशे-हफ़्त-आस्मां[१२]
हर सितारा लर्ज़ा-बर-अंदाम[१३] है मेरे लिए

(१९३६)

◇ ◇ ◇

१. पुरानी (अच्छी) शराब २. कच्ची ३. दुखों का हुल्लड़ ४. श्वास ५. दिनों का फेर ६. लज्जा और सम्मान का कारण ७. प्रेम का प्रकटीकरण ८. अर्थहीन ९. अस्त-व्यस्तता १०. हृदय-ग्राही ११. प्रेयसी की नज़र १२. सातों आकाशों के चक्र १३. शरीर को झकझोरने वाला

मश्अ़ल[1] थे जो बहरे-ज़ुल्मत में[2] , वो माहो-अख़्तर[3] टूट गये
और लुत्फ़ ये है ऐ तूफ़ानो ! कश्ती के भी लंगर टूट गये

इक यास[4] भरे दिल पर न हुई तासीर[5] तुम्हारी नज़रों की
इक मोम के बेहिस टुकड़े पर ये नाज़ुक ख़ंजर टूट गये

क्या मातम उन उम्मीदों का जो आते ही दिल में ख़ाक हुईं
क्या रोए फ़लक[6] उन तारों पर, दम-भर जो चमक कर टूट गये

या अश्कों का रोना था मुझे या अक्सर रोता रहता हूं
या एक ही गौहर[7] पास न था, या लाखों गौहर टूट गये

मेरी ही नज़र की मस्ती से सब शीशा-ओ-साग़र[8] रक़्सां[9] थे
मेरी ही नज़र की गर्मी से सब शीशा-ओ-साग़र टूट गये

ये अर्शे - मुहब्बत[10] है मेरा, ऐ तायरे-सदरह[11] होश में आ
इस लाहासिल सी[12] कोशिश में तख़ईल के[13] शहपर[14] टूट गये

तू और ग़मे-उल्फ़त 'जज़्बी' मुझको तो यक़ीं आए न कभी
जिस क़ल्ब पे[15] टूटे हों पत्थर, उस क़ल्ब में नश्तर टूट गये

(१९३७)

◇ ◇ ◇

१. मशाल २. अंधेरे सागर में ३. चांद-सितारे ४. निराशा ५. असर ६. आकाश ७. मोती ८. बोतलें और प्याले ९. नृत्यशील १०. प्रेम का सातवां आकाश (पराकाष्ठा) ११. सैकड़ों मार्गों पर उड़ने वाले पक्षी १२. व्यर्थ १३. कल्पना के १४. पंख १५. दिल पर

तुम चैन से आखिर सो न सके, दुख ही में रहे सुख पा न सके
ठुकराने को ठुकरा तो दिया, पर दिल से मुझे ठुकरा न सके
इस हिर्सो-हवा को[1] दुनिया में हम क्या चाहें हम क्या मांगें
जो चाहा हम को मिल न सका, जो मांगा वो भी पा न सके
दुनिया की बलाओं का हो भला, बेरहम खुदाओं का हो भला
हम हुस्नो-मुहब्बत के नग़मे ऐ दोस्त बहुत दिन गा न सके

(१९३७)

◇ ◇ ◇

तेरे करम की[2] भीख ले ऐसा हक़ीर[3] ग़म नहीं
जा, ओ सितम-शिआर[4] जा, आरज़ू-ए-करम नहीं
आह में गर्मियां नहीं, दीदा-ए-शौक़[5] नम[6] नहीं
इक दिले-ग़म-परस्त को[7] आज किसी का ग़म नहीं
सोज़ वही, तपिश वही, ज़ख्म वही, ख़लिश वही
पूछिये दिल से आज क्यों नाला-ए-दम-ब-दम[8] नहीं

(१९४१)

◇ ◇ ◇

१. लोलुपता की २. कृपा की ३. तुच्छ ४. अत्याचारी स्वभाव वाले ५. प्रेमपूर्ण आंख ६. सजल ७. ग़मों के उपासक (दुख-प्रिय) दिल को ८. निरन्तर आर्त्तनाद

मिले मुझको ग़म से फ़ुर्सत तो सुनाऊं वो फ़साना
कि टपक पड़े नज़र से मय-ए-इश्रते-शबाना[1]
यही ज़िन्दगी मुसीबत, यही ज़िन्दगी मसर्रत
यही ज़िन्दगी हक़ीक़त, यही ज़िन्दगी फ़साना
कभी दर्द की तमन्ना, कभी कोशिशे-मुदावा[2]
कभी बिजलियों की ख़्वाहिश, कभी फ़िक्रे-आशियाना[3]
मेरे क़हक़हों की ज़द पर[4] कभी गर्दिशें जहां की[5]
मेरे आंसुओं की रौ में कभी तल्ख़ी-ए-ज़माना[6]
मेरी रफ़अतों से[7] लर्ज़ां[8] कभी मेहरो-माहो-अंजुम[9]
मेरी पस्तियों से ख़ाइफ़[10] कभी औजे-ख़ुसरवाना[11]
कभी मैं हूं तुझसे नालां[12], कभी मुझसे तू परीशां
कभी मैं तेरा हदफ़[13] हूं, कभी तू मेरा निशाना
जिसे पा सका न ज़ाहिद[14], जिसे छू सका न सूफ़ी
वही तार छेड़ता है, मेरा सोज़े-शायराना

(१९३८)

◇ ◇ ◇

१. रात की भोग-विलास रूपी मदिरा २. उपचार की कोशिश ३. नीड़ की चिन्ता ४. लक्ष्य या आघात पर ५. संसार-चक्र ६. संसार की कटुता ७. ऊंचाइयों से ८. कम्पायमान ९. सूरज, चांद, सितारे १०. भयभीत ११. बादशाही शान १२. अप्रसन्न १३. निशाना १४. विरक्त

ज़िन्दगी अब ज़िन्दगी की दास्तानों में नहीं
बिजलियों का सोज़[1] शायद आशियानों में[2] नहीं
जिसको कहते हैं मुहब्बत, जिसको कहते हैं ख़ुलूस[3]
झोंपड़ों में हो तो हो, पुख़्ता मकानों में नहीं
ख़ूंचकां[4] आंखों पे धोखा है ख़ुमारे-इश्क़ का[5]
हैफ़[6] ऐ साक़ी कि तू भी राज़दानों में नहीं
ठैर[7] तो मुतरिब[8]! वो आई इक सदा-ए-दर्दनाक[9]
आह मुतरिब! कुछ मज़ा अब तेरी तानों में नहीं
ज़िन्दगी गो लाख बन जाये तबस्सुम-आफ़रीं[10]
ज़िन्दगी लेकिन तबस्सुम के फ़सानों में नहीं
यूं भी सुनता हूं तराने ग़म के बज़्मे-अश्क में[11]
जैसे कोई बात ही ग़म के तरानों में नहीं
अब कहां मैं ढूंडने जाऊं सुकूं[12] को ऐ ख़ुदा
इन ज़मीनों में नहीं, इन आस्मानों में नहीं
वो ग़ुलामी का लहू जो था रगे-अस्लाफ़ में[13]
शुक्र है 'जज़्बी' कि अब हम नौजवानों में नहीं

(१९३९)

◇ ◇ ◇

---

१. तपन २. घोंसलो में ३. सच्ची मैत्री ४. लहू बहाती ५. इश्क़ (रूपी नशे) के उतार का ६. धिक्कार ७. ठहर ८. गायक ९. दर्द भरी आवाज़ १०. मुस्कराहटें पैदा करने वाली ११. आंसुओं की (शोकग्रस्त) सभा में १२. शान्ति १३. पूर्वजों की नसों में

गुज़रेगी युँही अब तो ऐ दिल अब उनके यहां हम क्या जायें
इक़रार की आस रहे कब तक, इन्कार से कब तक शर्मायें

इज़हारे-ग़मे-दिल की[1] हमको आदत भी नहीं हसरत भी नहीं
लेकिन जो वो यूं इस्रार[2] करें ऐ दोस्त कि चुप तक हो जायें

ऐ जोशे-वफ़ा उन क़दमों की इज़्ज़त तो बढ़ा दी सर रख कर
अब हम कैसे इस ज़िल्लत के एहसास से छुटकारा पायें

तू मुफ़लिसो-आवारा[3] शायर, ज़रदार[4] नहीं, ख़ुद्दार नहीं
फिर 'जज़्बी' वो इक तुझ जैसे शायर को मनाने क्यों आयें

(१९४१)

◇ ◇ ◇

१. दिल के ग़म का प्रकटीकरण २. आग्रह ३. निर्धन और आवारा
४. धनी

हम दहर के[1] इस वीराने में जो कुछ भी नज़ारा करते हैं
अश्कों की ज़बां में कहते हैं आहों में इशारा करते हैं

क्या तुझको पता, क्या तुझको ख़बर, दिन-रात ख़यालों में अपने
ऐ काकुले-गेती[2] ! हम तुझको जिस तरह संवारा करते हैं

ऐ मौजे-बला[3] ! इनको भी ज़रा दो-चार थपेड़े हल्के-से
कुछ लोग अभी तक साहिल से तूफ़ां का नज़ारा करते हैं

क्या जानिये कब ये पाप कटे, क्या जानिये वो दिन कब आए
जिस दिन के लिए हम ऐ 'जज़्बी' क्या कुछ न गवारा करते हैं

(१९४३)

१. संसार के २. संसार के केशो (समस्याओं) ३. प्रचंड लहर

दिल में कुछ सोज़े-तमन्ना के[1] निशां मिलते हैं
इस अंधेरे में उजाले के समां[2] मिलते हैं

वही दीवानगी-ए-शौक़[3], वही तेशा-ए-ग़म[4]
राह चलिये तो वही कोहे-गिरां[5] मिलते हैं

आज भी कलियों के रुख़सार से[6] उड़ जाता है रंग
आज भी फूल मलूलो-निगरां[7] मिलते हैं

आज भी रेगे-बियाबां के[8] तपिशज़ारों में[9]
लड़खड़ाते हुए क़दमों के निशां मिलते हैं

आज भी जिस्म उसी तरह फ़िगार-ओ-मजरूह[10]
आज भी क़ल्ब[11] उसी तरह तपां[12] मिलते हैं

आज भी दिल हैं कि हो हश्र का[13] धोखा जिन पर
आज भी लब[14] हैं कि सरगर्मे-फ़ुग़ां[15] मिलते हैं

आज भी सर से गुज़र जाती हैं अमवाजे-बला[16]
आज भी अपने उभरने के निशां मिलते हैं

१. अभिलाषा की तपन २. अवस्था ३. इश्क़ का दीवानापन ४. ग़म की कुदाल ५. जटिल पर्वत ६. कपोलों से ७. दुःखित तथा रक्षक ८. बन की रेत ९. तपते मरुस्थलों में १०. घायल और टूटे हुए ११. दिल १२. तपते हुए १३. प्रलय का १४. होंट १५. आर्त्तनाद करते हुए १६. प्रचंड लहरें

हां उसी मंज़िले - सद - कैफ़ो - तरब की जानिब[1]
क़ाफ़िले आज भी अश्कों के रवां मिलते हैं

ऐ मेरे हम-सफ़रो[2] ! इसको तो मंज़िल न कहो
आंधियां उठती हैं, तूफ़ान यहां मिलते हैं

उनके हर वादा - ए - अल्ताफ़ की[3] रंगीनी में
कितने नादीदा[4] सितमहाए - गिरां[5] मिलते हैं

उनकी महफ़िल में वो बहके हुए सीमीं नग़मे[6]
अब तो कुछ दिन से ब-अंदाज़े-फ़ुगां[7] मिलते हैं

यूं गवारा है ये ख़ूंबार[8] उफ़क़ का[9] मन्ज़र
इसके परतौ में[10] हमें ताज़ा जहां मिलते हैं

(१९४९)

---

१. अति आनन्ददायक तथा हर्षप्रद मंज़िल की ओर २. सहचरो ३. प्यार निभाने या अनुकम्पा के वायदे की ४. अनदेखे ५. घोर अत्याचार ६. रजत राग ७. आर्तनाद के रूप में ८. लहू बरसाते हुए ९. क्षितिज का १०. प्रतिबिम्ब में

शरीके - महफ़िले - दारो - रसन[१] कुछ और भी हैं
सितमगरो[२] ! अभी अहले-कफ़न[३] कुछ और भी हैं

रवां-दवां यूंही ऐ नन्हीं बूंदियों के अब्र[४]
कि इस दियार में[५] उजड़े चमन कुछ और भी हैं

ख़ुदा करे न थकें हश्र तक जुनूं के[६] पांव
अभी मनाज़िरे - दश्तो - दमन[७] कुछ और भी हैं

ख़ुदा करे मेरी वामांदगी को[८] ग़ैरत आए
कि अब मनाज़िले-रंजो-मिहन[९] कुछ और भी हैं

अभी समूम ने[१०] मानी कहां नसीम से[११] हार
अभी तो मारका-हाए-चमन[१२] कुछ और भी हैं

अभी तो हैं दिले - शायर में सैंकड़ों नासूर
अभी तो मोजज़ा-हाए-सुख़न[१३] कुछ और भी हैं

दिले-गुदाज़ ने[१४] आंखों को दे दिये आंसू
ये जानते हुए ग़म के चलन कुछ और भी हैं

(१९४९)

◇ ◇ ◇

१. सूली पर चढ़ाने वाली महफ़िल में शामिल २. अत्याचारियो ३. मरने को तैयार ४. बादल ५. देश में ६. उन्माद के ७. जंगल, बियाबानों के दृश्य ८. थकन को ९. दुखों-कष्टों की मंज़िलें १०. विषैले पवन ने ११. सुगंधित पवन से १२. उपवन के मोर्चे १३. कविता के चमत्कार १४. कोमल हृदय ने

अभी ज़मीन हसीं है न आस्मान हसीं
अभी बनी ही कहां है मेरी बहिश्ते-बरीं[1]

अभी है ज़ौक़े-जुनूं[2] अपना मस्लहत-आगीं[3]
इधर भी एक नज़र ऐ निगारे - ख़िता - ए - चीं[4]

ये सोचता हूं कि बदला भी है निज़ामे-अलम[5]
ये देखता हूं कि मौजे-निशात[6] भी है कहीं

ये एहतिमाम[7], ये तैयारियाँ तबाही की
अरक़-अरक़[8] हुई जाती है ज़रफ़िशां-सी[9] जबीं[10]

तुम्हें सितम का[11] अज़ल ही से[12] हक़ सही लेकिन
यूंही रहेगा कोई ता-ब-के[13] मलूलो-हज़ीं[14]

हक़ीर[15] जिसको समझते हैं तेरे तीरो-सनाँ[16]
उसी लहू से मगर सुर्ख़ हो रही है ज़मीं

१. उच्च स्वर्ग २. उन्माद की अभिरुचि ३. समयानुकूल टहलने वाला ४. चीन देश रूपी सुन्दरी ५. दुखद परिस्थितियां ६. आनन्द की लहर ७. प्रबन्ध ८. पसीना-पसीना ९. सोना बखेरती हुई सी १०. माथा ११. अत्याचार का १२. अनादिकाल ही से १३. कब तक १४. शोकातुर १५. तुच्छ १६. तीर और (भाले की) अनी

है इसका सैद[1] ज़माने का एक-इक सय्याद[2]
फ़क़त[3] फ़ज़ाओं में[4] उड़ता नहीं मेरा शाहीं[5]

चमन पे गुज़री सो गुज़री मगर ये क्या कम है
कि फ़ाश[6] हो गये झूठी बहार के आईं[7]

चमन-परस्तों को[8] मुज़दा[9], चमन की लूट के साथ
उलझता जाता है कांटों में दामने-गुलचीं[10]

शदीदतर[11] हो जो एहसासे-दर्दे-महरूमी[12]
तो ये वो तीर है जिसके लिए ख़ता[13] ही नहीं

'शिकस्तो-फ़तह नसीबों से[14]' अब नहीं 'जज़्बी'
कि आज है दिले-हर-नातवां में[15] अज़्मो-यक़ीं[16]

(१६५०)

◇ ◇ ◇

१. आखेट २. आखेटक ३. केवल ४. शून्य में ५. बाज़ पक्षी ६. प्रकट ७. नियम, विधान ८. उपवन के उपासकों को ६. शुभ समाचार १०. पुष्प-चायी का दामन ११. तीव्रतर १२. वंचना के दुख का अनुभव १३. चूक १४. भाग्य से १५. प्रत्येक दुर्बल प्राणी के दिल में १६. विश्वास तथा संकल्प

बीते हुए दिलों की हलावत[१] कहां से लायें
इक मीठे - मीठे दर्द की राहत[२] कहां से लायें

ढूंढ़ें कहां वो नाला-ए-शबताब का[3] जमाल[४]
आहे-सहर-गही की[५] सबाहत[६] कहां से लायें

समझायें कैसे दिल की नज़ाकत का माजरा
ख़ामोशी-ए-नज़र की[७] ख़िताबत[८] कहां से लायें

तर्के-तअ़ल्लुक़ात[९] का हो जिससे एहतिमाल[१०]
बेबाकियों में इतनी सदाक़त[११] कहां से लायें

अफ़सुर्दगी - ए - ज़ब्ते - अलम[१२] आज भी सही
लेकिन निशाते-ज़ब्ते-मसर्रत[13] कहां से लायें

हर फ़तह के ग़रूर में बे-वजह, बे-सबब
एहसासे-इन्फ़आ़ले-हज़ीमत[१४] कहां से लायें

१. मिठास २. आनन्द ३. चमकती रात के आर्त्तनाद का ४. सौन्दर्य ५. प्रभात समय की ६. स्वच्छता, सौन्दर्य ७. नज़र की चुप्पी की ८. भाषण-शक्ति ९. सम्बन्ध टूटने का १०. संभावना ११. सच्चाई १२. दुखों के सहन करने से उत्पन्न होने वाली उदासी १३. प्रसन्नताओं को मन ही मन दबाने का आनन्द १४. पराजय की लज्जा की अनुभूति

आसूदगी - ए - लुत्फ़ो - इनायत के[१] साथ-साथ
दिल में दबी - दबी सी क़यामत कहां से लायें

वो जोशे - इज़्तिराब पे[२] कुछ सोचने के बाद
हैरत[३] कहां से लायें, नदामत[४] कहां से लायें

हर लहज़ा[५] ताज़ा-ताज़ा[६] बलाओं का सामना
ना-आज़मूदाकार की[७] जुर्रत कहां से लायें

है आज भी निगाहे - मुहब्बत की आरज़ू
पर ऐसी इक निगाह की क़ीमत कहां से लायें

सब कुछ नसीब हो भी तो ऐ शोरिशे-हयात[८]
तुझसे नज़र चुराने की आदत कहां से लायें

(१९५०)

◇ ◇ ◇

१. अनुकम्पा और दया-दृष्टि की सम्पन्नता के २. अधीरता के वेग पर ३. आश्चर्य ४. पश्चात्ताप ५. प्रतिक्षण ६. नई-नई ७ अनुभव-हीन की ८. जीवन के संघर्ष

सुकूं नहीं न सही दर्दे - इन्तिज़ार तो है
हज़ार शुक्र कोई दिल का ग़मगुसार[1] तो है
निगाहे-यास[2] न शर्मिंदा-ए-जफ़ा को[3] छेड़
यही बहुत है कि वो आज शर्मसार तो है
सुबूत दर्दे - मुहब्बत का और क्या होगा
मेरी नज़र से तेरा हुस्न आशकार[4] तो है
निगाहे-यास को आज़ादियां नहीं, न सही
शिकायते - ग़मे - हिज्रां का इख़्तियार तो है
तेरे जल्वों की रंगीनियों का क्या कहना
हमारे उजड़े हुए दिल में इक बहार तो है
बदल न जाए कहीं रंगे-मन्ज़रे-फ़ितरत[5]
तेरी तलाश में हर नाला बेक़रार[6] तो है
(१९३०)

◊ ◊ ◊

हमारे चाके - गिरेबां पे मुस्कराना था
जुनूं-नवाज़ ! ज़रा हौसला बढ़ाना था
जिगर बचाना था हमको न दिल बचाना था
नक़ाबे-रुख़ न उलटने का इक बहाना था
पड़ा हुआ है कहां ऐ हवा-ए-मयनोशी[7]
मुझे तो मस्ती-ए-सहबा में[8] डूब जाना था

१. सहानुभूति-कर्ता २. निराशा की नज़र ३. प्रेम न निभाने वाले लज्जित व्यक्ति को ४. प्रकट ५. प्रकृति के दृश्य का रंग ६. बेचैन ७. [illegible] की इच्छा ८. शराब की मस्ती में

जुनूने-इश्क़ के हम ज़िम्मादार ख़ुद ही सही
तुम्हें भी पर्दा-ए-गुल[1] ही से मुस्कराना था
ये कैसा शिकवा तग़ाफ़ुल का[2] हुस्न से 'जज़्बी'
तुम्हें तो भूलने वालों को भूल जाना था

(१९३०)

◇ ◇ ◇

मुस्करा कर डाल ली रुख़ पर[3] नक़ाब
मिल गया जो कुछ कि मिलना था जवाब
शामे - हिज्रां[4] ले रही है करवटें
बढ़ रहा है मेरे दिल का इज़्तिराब[5]
दिल की इक हल्की-सी जुंबिश[6] चाहिये
किसका पर्दा और फिर कैसी नक़ाब
अलअमां[7] बेताबी - ए - ग़म अलअमां
ज़र्रा - ज़र्रा है मेरे दिल का जवाब
अब तो मंज़िल की भी कुछ पर्वा नहीं
मैं कहां हूं ऐ दिले - नाकामियाब
झूम - झूम उट्ठी फ़ज़ा - ए - दोजहां
हाथ में जब आ गया जामे - शराब

(१९३१)

◇ ◇ ◇

---

१. फूल के पर्दे २. बेरुख़ी का ३. चेहरे पर ४. विछोह की शाम ५. घबराहट ६. थरथराहट ७. हे भगवान !

क्या किया तुमने कि दर्दे-दिल का दर्मां[1] कर दिया
मेरी ख़ुद्दारी का शीराज़ा परीशां कर दिया[2]
मुख़्तसर ये है कि हमदम मैंने फ़र्ते-शौक़ में[3]
अपनी हस्ती को भी वक़्फ़े-दर्दे-पिनहाँ[4] कर दिया
यूं बढ़ी साअ़त-ब-साअ़त[5] लज़्ज़ते-दर्दे-फ़िराक़[6]
रफ़्ता-रफ़्ता मैंने ख़ुद को दुश्मने-जां कर दिया
खेंच कर इक आह ज़ेरे-लब[7] किसी की बज़्म में
मुख़्तसर अफ़साना-ए-शबहाए-हिज्राँ[8] कर दिया
(१९३१)

◇ ◇ ◇

इक हश्र सा सहरा-ओ-गुलिस्तां में बपा है
वहशी ने जो दामाने-जुनूँ[9] चाक किया है
एहसासे-फ़ना[10] भी मुझे एहसासे-बक़ा[11] है
ये कौन सरे-बज़्म[12] मुझे देख रहा है
बेचारगी-ए-ज़ीस्त पे[13] क्या हंसती है ऐ मौत
एक-एक नफ़स से[14] कभी हंगामा उठा है
छा जाए दो आ़लम पे वो है हुस्न की आवाज़
जो दिल ही में गूँजे वो मेरे दिल की सदा है
(१९३२)

◇ ◇ ◇

१. इलाज २. स्वाभिमान को तहस-नहस कर दिया ३. इश्क़ के आधिक्य में ४. निहित पीड़ा के समर्पण ५. क्षण-प्रतिक्षण ६. विछोह की पीड़ा का आनन्द ७. होंटों ही होंटों में ८. जुदाई की रात का क़िस्सा ९. उन्माद का दामन १०. मृत्यु का अनुभव ११. जीवन का अनुभव १२. महफ़िल में १३. जीवन की विवशता पर १४. श्वास से

इस तरह हो गई है तकमील[1] जुस्तजू की
हर सिम्त देखता हूं तस्वीर आरज़ू की
दरिया-ए-ग़म की पैहम खामोशियों में घुट कर
बेइख़्तियार तड़पी हर मौज[2] आरज़ू की
ले चश्मे-ख़ुश्क[3] तेरी तक़दीर जाग उट्ठी
फिर उठ रही हैं मौजें दिल से मेरे लहू की
हम भी तो सुन रहे थे राश्रनाई-ए-गुलिस्तां[4]
बादे-ख़िज़ां से[5] जो कुछ कलियों ने आरज़ू की
आंखों में था किसी की एहसासे-ग़मगुसारी[6]
तीरे-नज़र ने दिल की रग-रग से गुफ़्तगू की
हां इक नज़र इधर भी ओ मुस्कराने वाले
तारीक[7] हैं फ़ज़ायें दुनिया-ए-आरज़ू की
(१९३२)

◇ ◇ ◇

ऐ तलव्वुनकेश[8] यूं मुझ पर सितम होता रहे
दर्दे-दिल साअ़त-ब-साअ़त[9] बेशो-कम[10] होता रहे
दर्दे-दिल होता रहे एहसासे-ग़म होता रहे
ज़ीस्त का सामां[11] ग़रज़ यूं ही बहम[12] होता रहे
ऐ मुहब्बत क्या क़यामत है कि तेरी राह में
एक दीवाना ख़राबे-हर-सितम[13] होता रहे
(१९३२)

◇ ◇ ◇

---

१. पूर्ति २. लहर ३. खुश्क आंख ४. बाग़ की सुन्दरता ५. पतझड़ की हवा से ६. सहानुभूति का अनुभव ७. अंधेरी ८. एक बात पर दृढ़ न रहने वाला ९. क्षण-प्रतिक्षण १०. कम और अधिक ११. जीवन-सामग्री १२. एकत्र १३. प्रत्येक अत्याचार का भागी

जिसे आज नग़मा समझती है दुनिया
वही नग़मा कल तक फ़ुग़ां[1] हो न जाए
जिसे साज़े - दौरां पे[2] गाना न आया
वो मुत्रिब[3] कहीं नौहाख़्वां[4] हो न जाए
बचाकर जिसे रख लिया है जबीं में[5]
वो सिज्दा भी नज़्रे - बुतां[6] हो न जाए
न कलियां ही चटकीं, न तारे ही चमके
मेरा ग़म ग़मे - दो-जहाँ हो न जाए
(१९४०)

◇ ◇ ◇

वही कसीफ़[7] घटायें, वही भयानक रात
सहर से जैसे गुरेज़ां हों[8] आज भी लम्हात[9]
वही जफ़ायें, वही सख़्तियां, वही आफ़ात[10]
तुम्हीं बताओ कि बदले कहां मेरे दिन-रात
ये बर्क़ो-बाद की[11] यूरिश[12], ये ज़हर की बारिश
मिली है अहले - चमन को बहार की सौग़ात
दिलों में आग, निगाहों में आग, बातों में आग
कभी तो यूँ भी निकलती है ग़मज़दों की[13] बरात
कभी - कभी तो ज़मीं - आस्मां चमक उट्ठे
कभी- कभी तो दहक उट्ठे ख़ाक के ज़र्रात[14]
ख़िज़ां - रसीदा[15] चमन आग हो गये 'जज़्बी'
हमारे दीदा-ए-पुरख़ूं में[16] थी मगर कुछ बात
(१९४६)

१. आर्त्तनाद २. जीवन के साज़ पर ३. गायक ४. विलापकर्ता ५. माथे में ६. मूर्ति या प्रेयसी की भेंट ७. बोझल ८. कन्नी कतरा रहे हों ९. क्षण १०. आफ़तें ११. बिजली और हवा की १२. आक्रमण १३. पीड़ित व्यक्तियों की १४. कण १५. वीरान १६. लहू भरी आंख में

ज़मीं, आस्मां, चांद, सूरज सितारे
हमारे हैं लेकिन नहीं हैं हमारे

अज़ल से[1] लरज़ते रहे हैं मिज़ा पर[2]
ख़ुदा जाने टूटेंगे कब ये सितारे

न जाने कोई मंज़िले - नूर[3] भी है
कहां तक चलें ज़ुल्मतों के[4] सहारे

हवायें तो कुछ और उलझा रही हैं
कोई काकुले - दहर[5] क्योंकर संवारे

तुझे आस्मां नाज़ है इक शफ़क़ पर[6]
ज़मीं पर तो हैं कितने ख़ूनीं नज़ारे

मेरा आस्मां इन से रोशन न होगा
मुझे कोई ला दे नये चांद तारे

नई मंज़िलें दावतें दे रही हैं
नई मुश्किलें कर रही हैं इशारे

रुपहले[7] पहाड़ों से क्योंकर रुकेंगे
ये बढ़ते हुए आग के तेज़ धारे

वहां से भी तूफ़ान उट्ठे हैं ऐ दिल
जिन्हें लोग समझा किये हैं किनारे

ये है सख़्ती-ए-रोज़ो-शब[8] इन्तिहा पर
कि दिन फिर रहे हैं हमारे - तुम्हारे

सियह रात क्यों कांप उठती है 'जज़्बी'
सहर के तो होते हैं दिलकश[9] इशारे

(१९५८)

---

१. आदिकाल से २. पलकों पर ३. प्रकाश की मंज़िल ४. अंधेरों के ५. संसार-रूपी केश ६. सूर्योदय की लालिमा पर ७. रजत ८. दिन रात की सख़्ती ९. सुन्दर

रुबाइयां

इफ़लास का[1] पुरहौल[2] नज़ारा देखा
बेगानगी-ए-दहर का[3] मारा देखा
आंखों में निहां[4] जज़्बा-ए-फ़ौलाद-शिकन[5]
पलकों पे लरज़ता हुआ तारा देखा

◇ ◇ ◇

वो चाके-जिगर[6] है कि सिये जाता हूं
ऐ कश्मकशे-दहर[7] जिये जाता हूं
इकतर्फ़ा तमाशा है कि पीता हूं शराब
और साथ ही आंसू भी पिये जाता हूं

◇ ◇ ◇

१. निर्धनता का २. भयानक ३. संसार की विमुखता का ४. छुपा हुआ ५. लोह-भंजक भावना ६. हृदय का घाव ७. संसार का संघर्ष

फ़ुटकर

जहां की कश्मकशों में फंसाये जाता है
वो देखना कोई दामन बचाये जाता है

◇ ◇ ◇

वुफ़ूरे-ग़म में[1] यूं पाबन्दी-ए-रस्मे-वफ़ा[2] करना
कभी इक आह भी करना तो आहे-नारसा[3] करना

◇ ◇ ◇

'जज़्बी' किसी को तुझसे क्यों बदगुमानियां हैं
क्या इज़्तिराबे-दिल[4] भी शामिल है ख़ामशी में

◇ ◇ ◇

जाने क्या था सवाल, क्या था जवाब
हाए अदा-ए-जवाब[5] ने मारा

◇ ◇ ◇

जब मुहब्बत का नाम सुनता हूं
हाए कितना मलाल[6] होता है

◇ ◇ ◇

ख़याले-मयकशी[7] मुझको, न होशे-आशिक़ी मुझको
ये किन राहों से यारब ले चली है ज़िन्दगी मुझको

◇ ◇ ◇

---

१. ग़म के आधिक्य में २. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा का पालन
३. वह आह जो विफल जाए (उन तक न पहुंचे) ४. मन की अधीरता
५. उत्तर देने की अदा ६. क्षोभ, दुख ७. मदिरापान का विचार